Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 1.2

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

4.11 जनवरी 2018 ई. 16/23 रबीउल् सानी 1439 हिजरी कमरी

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

**हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी सुरक्षित नहीं और हे जज़ायर के रहने वालो! कोई कृत्रिम ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को निर्जन पाता हूँ।**

**ख़ुदा प्रकोप में धीमा है, पश्चाताप करो ताकि तुम पर दया की जाए। जो ख़ुदा को त्यागता है वह एक कीड़ा है न कि मनुष्य और जो उस से नहीं डरता वह मुर्दा है न कि जीवित।**

## उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

**105. एक सौ पांच वां निशान** - एक बार मेरे भाई स्वर्गीय मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर साहिब के बारे में मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि उनके जीवन के थोड़े दिन रह गए हैं जो अधिकाधिक पन्द्रह दिन हैं। बाद में वह एक बार बहुत बीमार हो गए यहां तक कि केवल हड्डियाँ शेष रह गई तथा इतने निर्बल हो गए कि चारपाई पर बैठे हुए मालूम नहीं होते थे कि कोई उस पर बैठा हुआ है या चारपाई खाली है। शौचादि ऊपर ही निकल जाता था तथा बेहोशी की अवस्था रहती थी। मेरे स्वर्गीय पिता श्री मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब बड़े दक्ष वैद्य थे। उन्होंने कह दिया कि अब यह अवस्था निराशा की है केवल कुछ दिनों की बात है। मुझ में उस समय जवानी की शक्ति मौजूद थी तथा कठिन तपस्या की शक्ति थी तथा मेरी प्रकृति ऐसी है कि मैं प्रत्येक बात पर ख़ुदा को सामर्थ्यवान जानता हूँ तथा वास्तव में उसकी कुदरतों का अन्त कौन पा सकता है। उसके आगे कोई बात असंभव और अनहोनी नहीं सिवाए उन बातों के जो उसके वादे के विपरीत या उसकी पवित्र शान के विरुद्ध तथा उसके अद्वैतवाद के विपरीत हैं। इसलिए मैंने इस अवस्था में भी उनके लिए दुआ आरंभ की। तथा मैंने हृदय में यह निश्चय कर लिया कि इस दुआ में मैं तीन बातों में अपने आत्मज्ञान में वृद्धि करना चाहता हूँ।

**प्रथम** - यह कि मैं देखना चाहता हूँ कि क्या मैं ख़ुदा के दरबार में इस योग्य हूँ कि मेरी दुआ स्वीकार हो जाए।

**द्वितीय** - यह कि क्या स्वप्न जो अज़ाब के वादे के रूप में आते हैं उनमें विलम्ब भी हो सकता है अथवा नहीं ?

**तृतीय** - यह कि क्या इस स्तर का रोगी जिसकी मात्र हड्डियाँ शेष हैं दुआ के द्वारा ठीक हो सकता है अथवा नहीं।

अत: मैंने इसी आधार पर दुआ आरंभ की। मुझे क़सम है कि हस्ती की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं कि दुआ के साथ ही परिवर्तन अरंभ हो गया तथा इसी के मध्य एक अन्य स्वप्न में मैंने देखा कि वहजैसे अपने आंगन में अपने कदमों से चल रहे हैं और स्थिति यह थी कि दूसरा व्यक्ति करवट बदलता था। जब दुआ करते-करते पन्द्रह दिन हो गए तो उनमें स्वस्थ होने के कुछ बाह्य लक्षण उत्पन्न हो गए तथा उन्होंने इच्छा प्रकट की कि मेरा हृदय चाहता है कि कुछ क़दम चलूँ। अत: वह कुछ सहारा लेकर उठे और डंडा पकड़ कर चलना आरंभ किया और फिर वह डंडा भी छोड़ दिया। कुछ दिया। कुछ दिनों तक पूर्णरूप से स्वस्थ हो गए। तत्पपश्चात् पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहे और फिर स्वर्गवासी हो गए, जिससे विदित हुआ कि ख़ुदा ने उनके जीवन के पन्द्रह दिन पन्द्रह वर्ष में परिवर्तित कर दिए हैं। यह है हमारा ख़ुदा जो अपनी भविष्यवाणियों को परिवर्तित करने पर भी समर्थ हैं परन्तु हमारे विरोधी कहते हैं कि समर्थ नहीं।

**106. एक सौ छ: वां निशान** - एक बार दृष्टान्त के तौर पर मुझे ख़ुदा तआला के दर्शन हुए और मैंने अपने हाथ से कई भविष्यवाणियाँ लिखीं जिनका उद्देश्य यह था कि ऐसी घटनाऐं लेनी चाहिऐं। अत: मैंने वह कागज़ हस्ताक्षर कराने के लिए ख़ुदा तआला के सम्मुख प्रस्तुत किया और ख़ुदा तआला बिना किसी संकोच के लाल क़लम से उस पर हस्ताक्षर कर दिए तथा हस्ताक्षर करने के समय क़लम को छिड़का जैसा कि जब क़लम पर अधिक स्याही, आ जाती है तो इसी प्रकार झाड़ देते हैं और फिर हस्ताक्षर कर दिए। उस समय मुझ पर अत्यन्त आर्द्रता की अवस्था थी इस विचार से कि ख़ुदा तआला की मुझ पर कितनी कृपा और उपकार है कि मैंने जो कुछ चाहा अविलम्ब अल्लाह तआला ने उस पर हस्ताक्षर कर दिए। उसीसमय मेरी आंख खुल गई। उस समय मियाँ अब्दुल्लाह सिन्नौरी मस्जिद के कमरे में मेरे पैर दबा रहा था कि उसके सामने परोक्ष से लाल स्याही की बूंदें मेरे कुर्ते और उसकी टोपीपर भी गिरीं तथा अद्भुत बात यह है कि उस लाल स्याही की बूंदे गिरने तथा कलम को झाड़ने का समय एक ही था, एक सेकण्ड का भी अन्तर न था। एक ग़ैर व्यक्ति इस रहस्य को नहीं समझेगा तथा सन्देह करेगा क्योंकि उसे एक स्वप्न का मामला महसूस होगा परन्तु जिसे आध्यात्मिक बातों का ज्ञान हो वह इसमें सन्देह नहीं कर सकता। इसी प्रकार ख़ुदा नास्ति से आस्ति कर सकता है। अत: मैंने यह वृत्तान्त मियाँ अब्दुल्लाह को सुनाया, उस समय मेरी आँखों से आँसू जारी थे। अब्दुल्लाह जो एक देखने का साक्षी है उस पर बहुत प्रभाव हुआ तथा उसने मेरा कुर्ता बतौर तबर्रुक (बरकत के तौर पर) अपने पास रख लिया जो अब तक उसके पास मौजूद है।

**107. एक सौ सात वां निशान** - कई बार भूकम्पों से पूर्व अखबारों में मेरी ओर से प्रकाशित हो चुका है कि संसार में बड़े-बड़े भूकम्प आऐंगे यहां तक कि पृथ्वी उलट-पुलट हो जाएगी। अत: वे भूकम्प जो सानप्रांसिसको तथा फारमूसा इत्यादि में मेरी भविष्यवाणी के अनुसार आए वे तो सर्वविदित हैं किन्तु अभी जो 16 अगस्त 1906 ई. को अमरीका के दक्षिणी भाग में आर्थात् चिल्ली के प्रान्त में एक भयंकर भूकम्प आया वह पहले भूकम्पों से कम न था, जिससे पन्द्रह छोटे-बड़े शहर और कस्बे बरबाद हो गए तथा हज़ारों प्राणों की क्षति हुई और दस लाख लोग अब

**पृष्ठ 12 पर शेष**

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# ख़ुत्बः जुमअः

**पिछले ख़ुत्बा मैं मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से बताया था कि आप ने फरमाया है कि अगर व्यक्ति पूर्वाग्रह से मुक्त होकर और हर प्रकार की ज़िद से मुक्त होकर अल्लाह तआला से दुआ करे, बेचैन होकर अल्लाह तआला से यदि नमाज़ों में दुआ करे तो आप चालीस दिन नहीं गुज़रेंगे कि अल्लाह तआला उस पर सच्चाई को खोल देगा है लेकिन साफ दिल होना, सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त होना यह बहुत महत्त्वपूर्ण है।**

---

**कई लोगों को अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में भी अपने जीवन में सपनों के माध्यम से मार्गदर्शन भेजा। यह सिलसिला जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग में शुरू हुआ था आज भी कायम है। नेक लोगों को ख़ुदा तआला भी मार्गदर्शन करता है।**

---

**दुनिया के विभिन्न देशों में रहने वाले नेक प्रकृति और सच्चाई का तलाश करने वाले लोगों की अल्लाह तआला से सपनों और रोया द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता की तरफ मार्गदर्शन के ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन।**

---

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 नवम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

पिछले ख़ुत्बा मैं मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से बताया था कि आप ने फरमाया है कि अगर व्यक्ति पूर्वाग्रह से मुक्त होकर और हर प्रकार की ज़िद से मुक्त होकर अल्लाह तआला से दुआ करे, बेचैन होकर अल्लाह तआला से यदि नमाज़ों में दुआ करे तो आप चालीस दिन नहीं गुज़रेंगे कि अल्लाह तआला उस पर सच्चाई को खोल देगा है लेकिन साफ दिल होना, सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त होना यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। अन्यथा आप ने यह भी फरमाया है कि जो लोग दिलों में वैर रखें, क्रोध रखें या अच्छी मुक्त सोच न रखें वे हमेशा यही कहेंगे कि हमें अल्लाह तआला ने सपनों में मार्गदर्शन नहीं किया या आप के ख़िलाफ बताया। हालांकि, जो नेक दिल हो कर एसा करते हैं, उन्हें अल्लाह तआला की तरफ से मार्गदर्शन मिलता हैं। कई लोगों को अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में भी आप के जीवन में सपनों के माध्यम से मार्गदर्शन फरमाया।

इसलिए एक मज्लिस में चर्चा हुई कि लाहौर से एक व्यक्ति का पत्र आया कि उसे सपने में हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में बतलाया गया कि आप सच्चे हैं। उस व्यक्ति की आस्था एक फकीर के साथ थी। एक फकीर का वह मुरीद था दो दाता गंज बख्श के मकबरा के पास रहता था। उस आदमी ने उस से कहा कि मिर्ज़ा साहिब का इतने लंबे समय तक प्रगति करना उन की सच्चाई की दलील है । फिर एक और मस्त फकीर वहां बैठा हुआ था। उसने कहा, बाबा हमें भी पूछ लेने दो। दूसरे दिन, उन्होंने कहा कि ख़ुदा तआला ने कहा है कि मिर्ज़ा मौला है। तो उस पर पहले फकीर ने कहा कि मौलाना कहा होगा कि वह तेरा और मेरा हम सब का मौलाना है। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह सुन कर फरमाया, आज कल ख़वाब और रोया बहुत होते हैं मालूम होता है कि अल्लाह तआला चाहता है कि लोगों को सपनों के माध्यम से सूचित करे। ख़ुदा तआला के फरिश्ते इस तरह फिरते हैं जैसे आसमान में टिड्डी होती है वे दिलों में डालते फिरते हैं कि स्वीकार कर लो, स्वीकार कर लो।

फिर एक और व्यक्ति का हाल बयान किया जिसने हुज़ूर के रद्द में किताब लिखने का इरादा तो सपने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फरमाया कि तू तो रद्द लिखता है। "(ख़िलाफ लिख रहा है) "और वास्तव में मिर्ज़ा साहिब सच्चे हैं। "

(मल्फूज़ात जिल्द नंबर 4 पृष्ठ 188 संस्करण 1985 मुद्रित इंगलिस्तान)

तो अल्लाह तआला नेक प्रकृति लोगों को ग़लत काम से बचाने के लिए भी मार्गदर्शन कर देता है। वह विरोधी था उस ने आप के विरुद्ध लिखना चाहा था, लेकिन शायद अल्लाह तआला को उस की कोई भलाई पसंद थी, इसलिए अपने सपने में उसे इस बात से रोका गया है ।

यह सिलसिला जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम युग में शुरू हुआ था आज भी कायम है। नेक प्रकृति लोगों को अल्लाह तआला मार्गदर्शन भी करता है और जब वह मार्गदर्शन के लिए उसके आगे झुकते हैं तो कई बार ऐसा होता है कि पता नहीं होता लेकिन अल्लाह तआला मार्गदर्शन कर रहा होता है कि मसीह मौऊद आ गए। कभी-कभी कुछ लोगों के ज्ञान में होता है कि अल्लाह तआला उन्हें मार्गदर्शन करता है।

अल्लाह तआला से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सच्चाई के बारे में मार्गदर्शन किए जाने की एक घटना माली जो पश्चिमी अफ्रीका का एक देश है इसमें एक व्यक्ति के साथ इस तरह हुई। वहां के म्ुबल्लिग़ साहिब लिखते हैं कि मुस्तफा दियालू साहिब ने एक सपना देखा कि वह जन्नत में एक बहुत ही सुंदर घर में हैं। घर के एक तरफ पानी जा रहा है, जिस में एक सफेद रंग के बुज़र्ग की तस्वीर है। जिन्होंने पगड़ी पहनी हुई है। वह कहते हैं कि सपने के कुछ समय बाद वह अपने एक दोस्त के पास गए,तो उन के घर में उसी बुज़र्ग की बड़ी तस्वीर देखी। उन्होंने बुजुर्गों के बारे में अपने दोस्त के दोस्त से पूछा, और उन्होंने बताया कि यह इमाम महदी हैं अत: महोदय ने अपना ख़वाब सुनाया और अहमदियत के बारे में अधिक जानकारी चाही। इस पर अहमदी के दोस्त ने कहा, आज हमारी मासिक इज्लास है, आप मेरे साथ चलें आप को मुबल्लिग़ से सारे प्रश्न कर सकते हैं अत: वह इज्लास में शामिल हुए और बैठक के बाद अहमदी होने की घोषणा की लेकिन इसके साथ ही यह भी कहा कि मैं यह सच चाहता हूं कि यह सच्चाई मेरे सारे भाई बहन भी स्वीकार करें। यही कारण है कि मैं घर जाकर अपने भाई-बहनों को सूचित करूंगा और कल सब के साथ बैअत करूंगा। इसलिए अगले दिन, जब सहरी के समय सारे भाई-बहन हाज़र हुए तो उन्होंने अपनी ख़वाब सुनाई और साथ ही बाकी से भाई-बहनों को भी बैअत करने को कहा जिस पर सारे भाई बहनों ने उन्हें बुरा भला कहा और कहा कि तुम्हें यह नया धर्म अपनाने की कोई ज़रूरत नहीं है इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि वे निश्चित रूप से बैअत करेंगे। वह कहते हैं कि फ़ज्र की नमाज़ के बाद, वह थोड़ी देर सो गए तो, सपने में, देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उन्हें सूरत अल-हजर की आयत 30-33 पढ़ने की सलाह दे रहा है। जागने के बाद, वह मिशन आए और अपने भाई बहनों को अपनी ख़वाब वर्णन किया और साथ ही अपने सपने की व्याख्या भी पूछी। इस पर, मुरब्बी साहिब ने उन्हें कुरआन की प्रासंगिक आयतों को निकाल कर दिखाया, जिस में आदम की पैदायश

के बाद फिरश्तों के सिज्दा करने और इब्लीस के इंकार करने का वर्णन है। इसलिए उन्हें बताया गया कि आज सुबह जो घटना हुई इस पर अल्लाह तआला की तरफ से आप को निर्देशित किया गया है आप का बैअत में आना फरिश्तों वाला कार्य है। महोदय ने उसी समय बैअत कर ली औऱ जमाअत में शामिल हो गए अल्लाह तआला के फज़ल से जमाअत के बड़े सक्रिय सदस्य हैं।

इसी तरह, एवरी कोस्ट के शहर(Grand Lahou) के नए अहदी दोस्त गौने आदमा (Kone Adama) के एक सपने के आधार पर अहमदियत स्वीकार की आप इस घटना का वर्णन करते हैं। कहते हैं मैंने सपने में देखा कि मैं नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद में गया हूं। मैं क्या देखता हूं कि मस्जिद नमाज़ियों से भरी है। मैं नमाज़ पढ़ने के लिए एक तरफ जाए नमाज़ बिछाता हूं, अचानक एक व्यक्ति आता है और मुझसे पूछता है कि मैं किस फिर्के से सम्बन्ध रखता हूं, और मुझ से मेरी जाए नमाज़ ले लेता है। मैं उसे उत्तर देता हूं कि मैं अहमदी मुसलमान हूं। इस पर वह आदमी मुझे अहमदियत मस्जिद जाने और नमाज़ पढ़ने के लिए कहता है। अत: यह सपना देख मेरे तसल्ली हो गई, और मैं बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गया।

इसी तरह, एक महिला जमीला साहिबा हैं इन की अहमदियत स्वीकार करने की घटना का वर्णन है वह बताती हैं कि जमाअत से परिचय से बहुत पहले में सऊदी अरब में थी जहां मेरा रुझान सूफी मत की तरफ हो गया और हज़रत अब्दुल कादिर जिलानी की रचनाएं मेरे लिए बहुत अनुकूल थीं। उनके यहां वर्णन किए गए आदेशों का पालन करके, मुझे आराम और आध्यात्मिकता की भावना प्राप्त करने में आसानी होती। इस का तरीका यह था कि कि यह किस प्रकार इबादत या ज़िक्र करती थीं कि सौ सौ बार सूरत फिरतहा आयतल कुर्सी और सूरत इख़लास, पढ़ने के बाद अक हज़ार बार दरूद शरीफ और इस्तिग़फार किया जाता है कहती हैं इसी अकेलेपन के दिनों में मैंने एक रात रोया में देखा कि कि एक चांद की तरह बड़ा सितारा ज़मीन पर उतर रहा है और ज़मीन पर चल फिर रहा है और फिर छत के रास्ते वह हमारे घर में प्रवेश होता है। मैं भयभीत और हैरान थी कि मेरी आंख खुल गई। कुछ दिनों बाद मैं ने एक औऱ ख़वाब में पांच सितारे देखे जो एक लाइन में ज़मीन पर चल रहे थे परन्तु वह पहले देखे गए सितारे से साइज़ में छोटे थे वह जमीला साहिबा तो इतनी स्पष्ट नहीं हैं परन्तु ध्यान यही है कि जो पहला सितारा था वह उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा होगा और बाकी फिर पांच ख़लीफा। बहरहाल कहती हैं फिर जब एम टी ए के माध्यम से जमाअत के बारे में पता चला तो इस के बारे में जानने के प्यास बढ़ती चली गई। एम टी देखने के बाद मेरे दिल में हज़रत इमाम महदी की मुहब्बत पैदा हो कर बढ़ने लगी और मुझे इस बात का पूरी विश्वास हो गया कि और ही इमामुज़्ज़मान हैं। इसी दौरन में ने प्रोग्राम अल्हवालुल मुबाशिर में सुना कि हज़रत इमाम महदी की सच्चाई के बारे में तहकीक करने वालों को इस्तिख़ार: कर करे अल्लाह तआला से मार्गदर्शन का निवेदन करना चाहिए। अत: कहती हैं कि बताए गए तरीके के अनुसार मैंने दो रकअत नमाज़ अदा की और सो गई। इसी रात मैंने ख़वाब में देखा कि मक्का मुकर्रमा में लोगों की भीड़ में हूं। लोग अपने पांव के पंजों पर खड़े हो कर गर्दने लम्बा कर कर के अक आदमी को देखने की कोशिश कर रहे हैं. ऐसे मैं कोई ऊंची आवाज़ से कहता हैं कि हे लोगो तुम्हारा इमाम आ गया है। हे लोगो इमाम महदी आ गया है। मैं भी इस तरफ देखने की कोशिश करती हूं यहां तक कि इमाम महदी अलैहिस्सलाम एक ऊंचे स्थान पर सब के सामने प्रकट हो जाते हैं। इन का चेहरा चौदहवीं के चांद की तरह चमक रहा है। आंखों में दु:ख की भावना है। जब मैं ने ध्यान से इन के चेहरा की तरफ देखा तो वही इमाम महदी और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चेहरा था जिसे में एम टी ए में देख चुकी थी। यह देखते ही मेरी आंखों में आंसू छलक पड़े और मैं रोना शुरू कर देती हूं। जब मैं यह रोया देख रही थी मेरे पति जाग रहे थे। यह सोई हुई थीं और ख़वाब देख रही थीं। पति समीप ही जाग रहे थे। इस ने मुझे जगा कर कहा कि तुम बहुत दर्द के साथ रो रही थी। मैं जागी तो मेरी आंखें आंसुओं से भरी हुई थीं। कहती हैं कि इस रोया के बाद मुझे विश्वास हो गया कि यह आदमी ज़माने के इमाम हैं मैं ने इस इमाम की बैअत करने का फैसला ले किया। यह यमन की हैं और सब जानते हैं कि आजकल यमन के हालात बहुत ख़राब हैं और इन के समुन्द्री और हवाई रास्ते भी पड़ोसी देश सऊदी अरब ने बन्द कर दिए हैं। प्रत्येक प्रकार ई सहायता जाने पर वहां रोकें डाली जी रही है। मुसलमान मुसलमान को कत्ल कर रहा है और कारण यही है कि आने वाले इमाम को नहीं मानते। इन के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला इन की भी अवस्था फैले और यह आज़ादी और आसानी के साथ सांस लेने वाले हों। अल्लाह तआला इन पर रहम करे।

कुछ नेक फितरत लोग दिल से अहमदियत को अच्छा समझने के बावजूद कुछ कारणों से बैअत नहीं करते। अल्लाह तआला कैसे उन्हें बैअत कर के जमाअत में शामिल होने के बारे में ध्यान दिलाता है। इस बारे में माली से ही काई रीजिन के मुअल्लिम साहिब लिखते हैं कि एक दोस्त अबदुल हई जाबी साहिब के एक करीबी दोस्त की रमज़ान के आख़री दस दिनों में वफात हो गई। उन्होंने एक दिल ख़वाब देखा कि वह अपने इसा वफात पाने वाले दोस्त के साथ बस में सफर कर रहे हैं और इन के दोस्त इन को कहते हैं कि तुम जिस जमाअत में शामिल हो रहे हो वह सच्ची जमाअत है। मैं भी इसी जमाअत में शामिल हो रहा हों।। अब्दबल हई जाबी साहिब नियमित रूप से हमारा रेडियों सुनते थे और दिल से अहमदी थे परन्तु अभी तक बैअत न की थी। परन्तु इस ख़वाब के बाद उन्होंने फोन कर के कहा कि मैं काई शहर से काफी दूर रहता हूं। आप का रोडियों सुनता हूं। तब्लीग़ सुनता हूं। मैंने इस तरह से ख़वाब देखा है मेरी बैअत स्वीकार करें।

फिर मिस्र के एक दोस्त मुहमद ग़रीब साहिब कहते हैं कि नौ वर्ष की आयु से मैं ख़वाब में एक रौब दार आवाज़ सुन रहा हूं। जिस की आवाज़ मेरे कानों में गूंजती रहती है। मैं इस को समझ न सकता था परन्तु इस को सुन कर डर जाता था। फिर जब 2010 ई में मेरा एम टी ए अल्अरबिया से परिचय हुआ तो इस पर शरीफ औद: साहिब और असद मूसा औदह साहिब की आवाज़ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण सुने तो शीघ्र समझ में आ गया कि यही वह आवाज़ थी जो में नौ वर्ष की आयु से अपनी ख़वाब में सुन रहा था। अत: इसके बाद मैंने अधिक शौक के साथ एम.टी.ए देखना शुरू कर दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम और अपने कसीदे मेरे दिल में गहरा प्रभाव छोड़ जाते हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक चेहरा की कल्पना करता तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की छवि मेरे सामने आ जाती। एक दिन एम.टी.ए देख रहा था, और साथ ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर साथ आ रही थी। मैंने उसे सम्बोधित हो कर कहा कि मैं तुझे ख़ुदा की कसम देकर कहता हूं कि तुम मुझे बताओ क्या तुम अपने दावे में सच्चे हो या नहीं? इस के बाद कहते हैं कि मैं काम पर चला गया। शाम को जब वापस आया और शीघ्र टी.वी आन कर के एम टी ए लगाया तो उस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह उद्धरण पढ़ा जा रहा था कि يَا قَوْمِ اِنِّي مِنَ اللّٰهِ اِنِّيْ مِنَ اللّٰهِ وَاُشْهِدُ رَبِّيْ اَنِّي مِنَ اللّٰهِ, हे मेरी क़ौंम मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। हे मेरी क़ौंम! मैं ख़ुदा की तरफ से हूँ। मैं ख़ुदा की तरफ से हूँ, मैं अपने रब्ब को गवाह कर के कहता हूं कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। कहते हैं मैं यह सुनते ही अपने घुटनों के बल गिर गया और अपने आप ख़ुशी में टी.वी को ही चूमने लगा और साथ साथ عَلَيْكَ السَّلَام عَلَيْكَ السَّلَام कहना शुरू कर दिया यूं इस प्रकार एक क्षण में ही अहमदियत ही मेरा सब कुछ हो गई और फिर उन्होंने बैअत ले ली।

तब जॉर्डन के एक दोस्त जमील सरहान साहिब हैं। अपनी बैअत की घटना बताते हुए कहते हैं कि 1992 ई में जब मुसलमानों को विभिन्न समस्याओं और कठिनाइयों का सामना था तो रात दिन यह सोचता था कि ख़ैर उम्मत के साथ यह सब क्या हो रहा है? और यह अजीब बात है कि ख़ैरे उम्मत होने के बावजूद मुसलमान फूट और उपद्रवों का शिकार है और आपस में लड़ रहे हैं। मेरे अन्दर से आवाज़ आती है कि हमारा धर्म तो ऐसा नहीं है जैसे कि दिखाई दे रहा है। निसन्देह कोई एसी बात है जिस से उम्मत ग़फलत से काम ले रही है। कहते हैं कि एक रात मैंने सपना देखा कि मैं सड़क पर अकेला खड़ा हूं जो सीधी और मज़बूत है। इतने में एक नई मर्सिडीज कार आती है और इसमें एक ड्राईवर के साथ वाली सीट पर एक आदमी बैठा है जो मुझे कार चलाने का आदेश देता है। मैं ड्राईवर की सीट पर बैठ गया यह मेरे दिल में डाला गया कि मैं इमाम महदी अलैहिस्सलाम के साथ बैठा हूं, मुझे डर लगने लगा रास्ते में अचानक काले चेहरे वाले लोग दिखाई दिए और सड़क के दोनों किनारों पर लाइन लगा कर खड़े हो गए और उन के पास साधारण से हथियार भी थे। फिर उन्होंने हम पर गोली चलाना शुरू कर दी, लेकिन हमें गोली नहीं लगी और बिल्कुल सुरक्षित अपने स्थान पर पहुंच गए। कहते हैं मैं सपने मे ही गाड़ी खड़ी करती हूं तो हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम मुझे कहते हैं कि नीचे उतर आओ और गाड़ी की डिक्की खोलो। मैं नीचे उतर कर खोलता हूं तो उस के अन्दर सुन्दर लकड़ी का बक्स है जिसमें पांच वर्षीय बच्चा है जो बहुत सुंदर है। वह बच्चा मुझे देखने लगता है। जब मैं जागा तो मैं सपने से बहुत खुश था और दिल में

कहा कि यह निश्चित रूप से ख़ुदा तआला की तरफ से एक संदेश है। मैंने इस के अर्थ यह निकाले कि नई गाड़ी का अर्थ जीवन का एक नया सफर है। काले आकार वाले जो हम पर फायरिंग करते हैं उनसे मतलब इस नए यात्रा से दुश्मनी करने वाली बातें और कार्य हैं जिनका कोई असर नहीं होगा और सुंदर सन्दूक में रहस्य सहेजे जाते हैं और पांच साल के बच्चे को से अभिप्राय कुछ अच्छी ख़बरें हैं जो पांच साल के भीतर पूरी हो जाऐंगी। कहते हैं कि अजीब बात यह है कि मैंने अपने सपने की यह व्याख्या समझी और वह इस तरह प्रकट हुई कि जमाअत अहमदिया से परिचय के बाद मेरे जीवन का नया सफर शुरू हो गया और ख़िलाफत ख़ामसा के मुबारक समय में मुझे जमाअत में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। कहते हैं कि मैं अपने गांव में अकेला अहमदी था और जैसे ही मैं मैंने इमाम मेहदी के प्रकट होने की घोषणा की थी, तो वे सब मेरे शत्रु होगए। मस्जिदों से मेरे कुफ्र के फत्वे जारी होने लगे। फिर मैंने ख़ुदा तआला से दुआ की कि इस सफर को पूर्ण करने के लिए मुझे साथी प्रदान कर तो ख़ुदा तआला ने मुझे ऐसे नेक और अच्छे लोग प्रदान कर दिए जिन्हें मैं जानता भी न था और वही मेरे वास्तविक मित्र और साथी ठहरे।

फिर एक दोस्त मुहम्मद अब्दुल्ला हैं जो सीरिया के हैं और आज कल कनाडा में है। वह कहते हैं कि मैं एक विक्रेता की नौकरी करता था मेरे ग्राहकों में से एक आदमी के एक बेटे के साथ मेरी परिचय हुआ। यह युवा अहमदी था इससे संबंध बड़ा तो उसने मुझे जमाअत अहमदिया के मूलभूत विश्वासों और इसके नवीकरण के बारे में बताया। उन्होंने मुझे इस्लामी सिद्धांतों के दर्शन का अरबी अनुवाद दिया। मैं इस किताब को पढ़ने से बहुत प्रभावित हुआ और इस में बहुत ही तथ्यपर्क बातें पसंद आईं। फिर, लगभग एक साल तक, मैं जमाअ तकी विभिन्न पुस्तकें पढ़ता रहा। इसके अलावा, एम.टी.ए ने अल-अरबिया भी देखना शुरू किया एक साल का अध्ययन करने और एम.टी.ए देखने और जमाअत की आस्थाओं को परखने के बाद, मेरे अपने दिल में जमाअत अहमदिया में शामिल होने की इच्छा जन्म लेने लगी। लेकिन मैंने अपनी भीतरी आध्यात्मिक शुद्धि के बारे में नहीं समझ पाया और अपने आप को इस पवित्र जमाअत के योग्य न समझता था और इस स्थान तक पहुंचने के मार्गों से अपरिचित था। अत: मैंने अपने दोस्त से कहा कि मुझे कुछ अहमदियों से मिलवा दो है। इस पर उन्होंने अपने घर में कुछ अहमदियों के साथ बैठक की व्यवस्था की। ये नेक दोस्त आए जिनके साथ मुझे आध्यात्मिक विकास के बारे में बात करने से ऐसा महसूस हुआ जैसे कि मेरी आध्यात्मिक प्यास की तृप्ति हो गई है। क्योंकि मुझे रोया सालेहा के कारण विश्वास था कि अल्लाह तआला मुझे बर्बाद नहीं करेगा और निश्चित रूप से मेरा मार्गदर्शन करेगा। अत: यह सोचकर मैंने इस्तिख़ार: शुरू कर दिया। मैं अपने काम के लि एदमिश्क में था, जबकि मेरी पत्नी अलेप्पो में परिवार के अन्य लोगों के साथ रहती थी मैंने अपनी पत्नी को फोन करना शुरू कर दिया और मुझसे पूछा कि क्या इस अवधि में कोई सपना देखो तो जरूर मुझे बताना। कहते हैं कि कुछ दिनों क बादे आने वाली रात मेरे लिए लैयलतुल कद्र की रात साबित हुई। जिस में मैंने एक महान रोया देखी। मैंने अपने नेक आर अच्छे आचरण वाले रिश्तेदार के सपने में देखा इस ने मुझे एक पृष्ठ देते हुए कहा कि यह आप का हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से है। मैं शीघ्रता से उस देखा तो उस में लिखा हुआ था कि "अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहो" मैं जागा तो बहुत ख़ुश था और मेरी ज़बान पर यह आयत जारी थी اُدۡخُلُوۡهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيۡنَ कि इन में सलामती के साथ नि:संकोच प्रवेश कर जाओ कहते हैं यह जमाअत में सम्मिलित होने के लिए एक स्पष्ट सन्देश था यद्यपि यह रोया तो आने वाले महदी और मसीह मौऊद को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सलाम पहुंचाने की तरफ इशारा कर रहा था परन्तु उस समय मुझे इस का ज्ञान नहीं था। बहरहाल मुझे विश्वास था कि यह मेरे इस्तिख़ारा का जवाब था और इस कारण से फिर मैंने बैअत कर ली।

फिर सीरिया की एक महिला हैं वह अपनी बैअत की घटना बताते हुए कहती हैं कि अहमदियत के बारे में जानने से पहले मैं और मेरी बहन एक जमाअत को सच्चा समझ कर इसमें शामिल हुईं लेकिन बाद में पता चला कि इस जमाअत ने तो शरीयत के नाम पर अपने ही कानून हैं इस के बाद मैंने ख़ुदा तआला रो रोकर दुआ की और कहा कि हे मेरे ख़ुदा मुझे बता कि आपका सही धर्म आज क्या है और आजकल किस समुदाय को आपका समर्थन है? कई दिनों तक दुआ करने के बाद, एक दिन मुझे लगा कि एक महान प्रकाश मेरे शरीर में प्रवेश हुआ है। इस स्थिति को देखते हुए, कहती हैं कि मैंने अपनी दुआएं ओर तेज़ कर दीं और करूणा के कारण गले में मेरी आवाज़ फंस जाती थी। ऐसी स्थिति में मैंने देखा कि एक व्यक्ति मेरे साथ आया है और इस स्थिति में मुझे लगा कि वह मेरे साथ सहानुभूति के लिए आया था। मैंने अपने दिल में कहा, "यह व्यक्ति कौन है, लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला।" अगले दिन, मैं बहुत रोई यहां तक कि मेरे हिचकी बंध गई। उस समय, फिर मुझ पर वही अवस्था छा गई थी और मैंने इस व्यक्ति को मेरे साथ फिर से देखा। फिर तीसरी बार इसी प्रकार हुआ मैंने ख़ुदा तआला से ज़ोर से दुआ की कि ख़ुदा तआला मुझे यह बता दे कि यह सहानुभूति करने वाला व्यक्ति कौन है और बार-बार मुझे क्यों दिखाई देता है? कहती हैं कि इस प्रश्न का उत्तर मुझे कुछ समय बाद मिला। हुआ इस प्रकार कि मैं अपनी बहन और ख़ाला के साथ बैठी थी तो इस विषय पर बात होने लगी कि अब तो मसीह मौऊद को आ जाना चाहिए। हम कहते कि आजकल के दौर में टीवी द्वारा कहीं से घोषणा होगी कि मसीह आ गया है और लोग उस पर ईमान लाने के लिए दौड़ पड़ेंगे लेकिन हमारे मौलवियों ने तो टीवी देखना भी हराम क़रार दिया है। कुछ क्षेत्रों में अरबों के बीच मौलवियों का यह फत्वा है कि टीवी देखना हराम है कहती हैं हम टीवी नहीं देखेंगी तो कैसे जानेंगे? आपस के लम्बे विमर्श बाद, हमने हमारे मौलवी के फत्वों का उल्लंघन करते हुए टीवी देखना शुरू कर दिया। इस के बाद मैंने एक अजीब रोया देखी जिस ने मेरी सोच को पलट दिया। मैंने देखा कि मैं एक बड़े मैदान में हूँ ऐसे में कुछ लोगों को एक कार में आते देखा जिस की छत सैटेलाइट डिश लगी हुई थी। उनकी कार इस मैदान के मध्य में पहुंच कर रुक जाती है, और उनमें से कुछ लोग सामान निकाल कर ज़मीन पर रखते जाते हैं और इनमें से एक ने अरबी कपड़े पहनें हुए है और उनका चेहरा उज्ज्वल है। अचानक यह आदमी मेरे सामने मैदान के बीच से आता है और मुझसे कहता है कि बहन तुम यहाँ क्या कर रही हो? मैं जवाब देने के बजाय, उस से पूछती हूं कि आप लोग यहां क्या कर रहे हैं। उनका कहना है कि हम एक नए टीवी चैनल खोलने लगे हैं, क्या तुम इसे देखोगी। मैं कहती हूँ क्यों नहीं मैं निश्चित रूप से देखोंगी यह कहते हैं, इस बातचीत के बाद मेरी आँखें खुली अगले दिन मैं टीवी लाई और थोड़ी देर में ही सब कुछ सेट कर दिया। विभिन्न चैनलों को देखते हुए मुझे एहसास हुआ कि एक चैनल सभी से अलग था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि यह किसी ओर ही ज़माना का चैनल है। यही कारण था कि मैं बाकी चैनलों को थोड़ी देर के लिए देखना छोड़ दिया। यह चैनल एक एम.टी.ए था और उस समय यह हवार का प्रोग्राम चल रहा था। इस कार्यक्रम को देखते समय बार बार मेरी नज़र कार्यक्रम के मेज़बान की तरफ उठती और मुझे ख़्याल होता कि मैं ने इसे कहीं देखा है. अचानक मुझे ख़याल आया कि यह तो वही आदमी है जिसे मैंने ख़्वाब में ख़ुले मैदान में सैटेलाइट चैनल खोलते हुए देखा था और फिर इस के साथ ख़्वाब में ही इस का चैनल देखने का वादा किया था। अपने वादे को याद कर के मैं इस चैनल को देखन लग गई फिर इसी चैनल की हो कर रह गई। एक दिन मैं आदत के अनुसार इन का प्रोग्राम देख रही थी कि इस में इमाम महदी और मसीह मौऊद के शब्द सुन कर में ध्यान से सुनने लगी। इतने में एक तस्वीर टीवी की स्क्रीन पर प्रकट हुई और इस के नीचे इमाम महदी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्द लिखे हुए थे। मेरा ध्यान ओर बढ़ गया। इतने में इमाम महदी अलैहिस्सलाम के कलाम में से कुछ उद्धरण प्रस्तुत किए गए। पहले उद्धरण का पहला वाक्य ही मेरी काया पटलने के लिए काफी था وَاللّٰهِ اِنِّیۡ مِنَ اللّٰهِ اَتَیۡتُ وَمَا افۡتَرَیۡتُ وَقَدۡ خَابَ مَنِ افۡتَرٰی अर्थात ख़ुदा की कसम मैं ख़ुदा की तरफ से आया हूं न कि मैंने कोई झूठ बोला है। निसन्देह झूठ बोलने वाले अपमानित और असफल होते हैं। यह शब्द सुनते ही मैं ने अपने आप कहा कि यह किसी सच्चे के शब्द हैं। नि:सन्देह यह आदमी अपने दावा में सच्चा है और यही मसीह मौऊद और इमाम महदी है। उद्धरण के बीच में ही जब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर दिखाई गई तो अब की बार मैं इस को देख कर वहीं ठिठक कर रह गई क्योंकि यह वही आदमी था जिसे इस से पहले मैं कश्फी अवस्था में देख चुकी थी। जब मैं ने ख़ुदा तआला से रो रो कर दुआ की थी कि है ख़ुदा तआला आज तेरा सही धर्म कहां है और आज किस जमाअत को तेरा समर्थन प्राप्त है। उस समय सही आदमी मेरे साद सहानुभूति करने आया था और उसे देख कर मैंने कहा था कि न जाने यह कौन आदमी है अब टी.वी पर वही तस्वीर देख कर मुझे अपना वही कश्फ और उस का अर्थ समझ आ गया। ख़ुदा तआला ने मुझे उस समय बताया कि यह आदमी है जिस

की जमाअत को ख़ुदा तआला का समर्थ प्राप्त है और यही ख़ुदा तआला के सच्चे धर्म की प्रतिनिधि जमाअत है। कहती हैं कि मैं ने रोते हुए इस तस्वीर को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज तू ही इस्लाम की प्रतिरक्षा कर रहा है। तू इसाइयों के अरोपों का उत्तर दे रहा है। तू ही सच्चा महदी और मसीह है। मैं तुझे सच्चा समझती हूं और तेरी बैअत करती हूं। हालांकि मुझ उस समय ज्ञान भी नहीं था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करनी ज़रूरी है मैं ने अपने निकटवर्ती लोगों को इस चैनल और जमाअत के बारे में बताया तो अधिकतर लोगों ने मेरी बातों को गम्भीरता पूर्वक न लिया लेकिन मेरी बहन ओर ख़ाला ने कई दिनो तक एम टी ए देखने के बाद बैअत करने का फैसला लिया और फिर बाद में मेरी माता भाई और दूसरी दो बहनों ने भी बैअत कर ली। इस का नाम है ग़नी अलजान।

फिर मिस्र के एक दोस्त सईद रख़ा साहिब हैं। कहते हैं कि अहमदियत के साथ परिचय होने से कुछ समय पहले मैंने एक रोया में ख़ुद को एक ख़ुले मैदान में पाया। जहां एक सुन्दर ख़ेमा लगा हुआ था जिस के बाहर कई लोग इस की सुरक्षा पर तैनात थे। इन सुरक्षा करने वालों में से एक ने मुझे कहा कि तुम यहां कैसे आ गए? मैंने कहा मैं नहीं जानता लेकिन आप यह बता सकते हैं कि इस तम्बू में कौन है? इस सुरक्षा करने वाले ने कहा कि इस तम्बू में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। जब मैंने यह सुना, मैं बहुत खुश था, और इस के साथ बहुत डर रहा था, क्योंकि मुझे यकीन नहीं था कि मैं उस महान जगह पर कैसे पहुंचे जहां हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मौजूद थे। इस बीच, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बहुत सुंदर और प्यारी आवाज़ आती है। आप फरमाते हैं, तुम मेरा मान सम्मान कर रहे हो परन्तु शीमाअ को क्यों छोड़ आए हैं? तैयार हो जाओ क्योंकि वह आ रही है उस समय तम्बू खुलता है, और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आसमानी रंग की चादर ओढ़े बाहर तशरीफ लाते हैं: दूसरी ओर से शीमए नाम की एक छोटी सी लड़की एक स्कूल की वर्दी पहने हुए आ जाती है, और सभी संरक्षक दो पंक्तियां बना कर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और लड़की का स्वागत करते हैं कहते हैं उस समय तक ख़वाबों पर विश्वास नहीं करता था। शीमअ नामक बच्चे का भी मेरी ख़वाब में आना इस विचार को मज़बूत करता था कि यह व्यर्थ का ख़वाब है। बहर हाल कहते हैं कि मैं ने इस ख़वाब पर कोई ध्यान न दिया। बाद में मुझे पता चला कि इस बच्चे की उपस्थिति मेरे इस विचार की पुष्टि के बारे में आश्वस्त करने के लिए थी। बहरहाल कहते हैं कि मैंने इस सपने के बारे में नहीं सोचा था इसके बारे में किसी ने भी इसका उल्लेख नहीं किया। मुझे यह विश्वास नहीं था और मुझे यह भी था कि इस बच्ची का आना एसी था कि मुझे ग़लत ख़वाब आ गई है। इसलिए उल्लेख करने की कोई जरूरत नहीं थी। लेकिन सिर्फ कुछ दिन बीते थे कि मैंने एक और रोया देखी जो पहले रोया की तरह थी। मैंने एक गेहूं रंग वाले व्यक्ति को देखा मैंने पूछा कि यह कौन है तो मुझे बताया गया कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। आप कुछ देर के बाद वफात पा गए और आप की तदफीन हो गई। इस के बाद देखा कि चांदी के सिक्कों के एक बड़े ढेर स`लोग बालिटयां भर भर कर आप की कब्र पर डालते जा रहे हैं। मैंने आदत के अनुसार इस रोया पर भी कोई ध्यान न दिया और न ही इस के बारे में किसी को कुछ बताया। लेकिन उपर्युक्त दोनों सपनों ने मुझे एक चीज़ के बारे में सोचने के लिए मजबूर किया यह था कि मैंने दोनों सपने में अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा, लेकिन दोनों सपने में देखे गए आदमी अलग-अलग थे। मैंने अक्सर सोचता था कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शक्ल तो एक ही है। फिर, यदि मेरा सपना सच है, तो हर ख़वाब में आपकी शक्ल अलग-अलग कैसे हो सकती है? कहते हैं कि कुछ दिनों के बाद जब मैं एक किताब की दुकान में था जहां मैं काम करता था, तो किताबों को साफ करने का काम कर रहा था तो एक अख़बार के पेज पर एक तस्वीर देख कर मैं हैरान हो गया। यह एक बच्ची की फोटो है यह कोई सामान्य बच्ची नहीं था, बल्कि शीमा नामक वही बच्ची थी, जिसे मैंने कुछ दिन पहले सपना में देखा था। पढ़ा लिखा न होने के कारण, मैंने अपने कुछ दोस्तों से इस तस्वीर की कहानी पूछी, तो मुझे पता चला कि यह लड़की कुछ साल पहले आतंकवादी हमले में मारी गई थी। मैं चूंकि पढ़ा लिखा न था न अख़बार टी.वी पर समाचार सुनता था। यही कारण है कि मुझे इस दुर्घटना के बारे में नहीं पता था। मैंने कभी भी इसके बारे में कभी नहीं सुना था लेकिन शीमा की तस्वीर को देखकर, मुझे यकीन था कि मेरा पहला सपना सच था और इस बच्ची का सपने में आना मुझे इस ख़वाब के सच्चा होने पर आश्वस्त करने के लिए था। इस घटना के बाद यह भी विश्वास हो गया कि पहली रोया की तरह दूसरा सपना भी सच है, लेकिन मैं समझ नहीं पा रहा था कि अगर दूसरा सपना सच है तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अलग-अलग शक्लों का क्या अर्थ है? कई साल गुज़रने का बाद एम.टी.ए पर विभिन्न चैनल को बदल कर कुछ देख रहा था कि एम.टी.ए लग गया, जिस पर उस समय कार्यक्रम अलहावरुल आ रहा था जिस पर वफात मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में बात हो रही थी। मैं पढ़ा लिखा तो था नहीं, न ही कोई विशेष धार्मिक ज्ञान था, इसलिए मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। कुछ समय बाद शरीफ औदा साहिब ने कार्यक्रम में कहा कि हम अब एक ब्रेक लेते हैं, जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कसीदा सुनते हैं। कसीदा के साथ एक व्यक्ति की तस्वीर भी दिखाई जा रही थी जो मेरे लिए किसी आश्चर्य से कम न थी यह उस व्यक्ति की तस्वीर थी जिसे मैंने दूसरी ख़वाब में देखा था, और मुझे बताया गया था कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। इस तथ्य के प्रकट हो जाने के बाद, मैंने किसी से इस बारे में बात नहीं की, और मेरी पत्नी के साथ मिल कर चुपचाप एम.टी.ए देखता रहा। एक महीने के बाद मैंने अपनी पत्नी से पूछा, इस जमाअत के बारे में तुम्हारा क्या विचार हैं? उन्होंने कहा कि मेरी राय में यह जमाअत सच्ची और सत्य है। तब मैंने उसे इस रोया का वर्णन कर के बताया जिसमें मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखा था और मुझे बताया गया कि यह रसूलुल्लाह हैं। क्योंकि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ और ग़ुलाम थे। इसलिए कभी जो सपने में सपने देखते थे, इसका मतलब था कि आपका आगमन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आगमन है। और यही आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था। कहते हैं हम आठ महीनों तक एम टी ए देखते रहे थे लेकिन अभी तक बैअत नहीं की थी। एक दिन मेरी पत्नी ने मुझसे कहा, क्या तुम बैअत करने के लिए तैयार नहीं हो? मैंने कहा क्यों नहीं। दो हफ्ते बाद मेरी पत्नी ने मुझसे फिर से पूछा, क्या तुम बैअत के लिए तैयार नहीं हो? मैंने फिर वही जवाब दिया क्यों नहीं मैं तैयार हूँ। कहने लगी अब अगर तुम बैअत करने के लिए नहीं गए तो मैं अब अकेली चली जाऊंगी। अत: पत्नी की इस स्पष्ट बात के बाद मैंने जमाअत के लोगों से सम्पर्क किया और हम दोनों ने बैअत का फार्म भर दिया। तो कई बार औरतें भी पुरुषों को साहस और त्वरित मार्गदर्शन का कारण बन जाती हैं।

आइवरी कोस्ट के हमारे मुबल्लिग़ बासित साहिब ने लिखा है कि एक गांव कुचालू के एक प्रतिनिधिमंडल ने अनुरोध किया था कि हमारे यहां भी तब्लीग़ की जाए। अगले दिन, एक प्रतिनिधिमंडल के साथ संबंधित गांव पहुंचे और इशा की नमाज़ के बाद तब्लीग़ का कार्यक्रम शुरू हुआ। रात दस बजे तब्लीग़ शुरु हुई और फिर इस के बाद सवाल और जवाब का क्रम 3:00 तक जारी रहे। इस प्रोग्राम में बड़ी संख्या में मुस्लिम ईसाई और मुश्रिकों ने भाग लिया। (लोग समझते हैं कि अफ्रीकन इसी प्रकार स्वीकार कर लेते हैं। पांच छा घण्टे यह कर्म जारी रहा और फिर वे सवाल भी करते रहे।) कहते हैं कि गांव के प्रमुख चीफ ने भी सारा समय तब्लीग़ सुनी और अल्लाह तआला की कृपा से उस समय 160 लोगों ने बैअत करके अहमदियत स्वीकार की। कहते हैं सुबह 8 बजे, जब हम चीफ से मिलने के लिए उन के घर गए, तो गांव के नए अहमदी भी उनके साथ थे। इस अवसर पर चीफ ने एक सपना सुनाया जो उसने एक साल पहले 2014 ई में देखा था। कहते हैं मैं ने देखा कि मैं अपने घर में बैठे हैं और दो सफेद जहाज़ आते हैं। एक गांव से कुछ दूर से वापस चला जाता है जबकि दूसरा उनके पास एक दूसरे पेड़ पर उतर जाता है और वे सीढ़ी लगा कर ऊपर जाते हैं। इस जहाज़ में मुसलमान सवार हैं। वे उन्हें एक पुस्तक देते हैं जब वे नीचे आते हैं, तो वे किताब को देखते हैं, फिर यह सुंदर सोने में बदल जाती है। आज़ान की आवाज़ पर उनकी आँख खुल जाती हैं। चीफ साहिब कहते हैं कि उन्होंने अपनी यह ख़वाब कई मुस्लिम उलमा को सुनाई लेकिन कोई भी इस का अर्थ न कर सका। एक ग़ैर अहमदी मौलवी ने कहा कि इस सपने में तुम ने सोना देखा है जो कि एक अच्छा शगुन नहीं है। तुम एक किलो सोना मुझे दे दो वरना तुम्हारे लिए यह अच्छा नहीं है। फिर ख़ुद ही कहने लगा कि यह तो तुम्हारे लिए संभव नहीं है कि तुम एक किलो सोना दे दो बेहतर है कि तुम बस बीस हजार फ्रांक सीफा दे दो तो मैं तुम्हारे लिए कुछ करता हूं।। दूसरे ने कहा,

दो सफेद बकरे सदका दे दो। इस पर हमारे मुबल्लिग़ गांव के चीफ को उन के ख़वाब की व्याख्या को बताते हुए कहा कि दो सफेद जहाज़ों से अभिप्राय दो सफेद कारें हैं, जिनमें से एक आपके गांव तक पहुंचने के दौरान आपके घर तक नहीं पहुंची जब कि तुम्हारे गांव तक पहुंची है। कहते हैं मेरी और अमीर साहिब दोनों की कारें सफेद रंग की हैं। इस गांव में आने से पहले, अमीर साहिब हमारे इलाके में आए थे और फिर वह अपनी सफ़ेद कार पर वापस चले गए। सीढ़ी लगा कर ऊपर पहुंचने से अभिप्राय इसका अर्थ आप का इस्लाम को सीखने की कोशिश करना और जानना है आप ने सुबह तीन बजे तक तब्लीग़ सुनी है। रही किताब की बात तो आने वाले महदी के बारे में बताया गया है कि वह ख़ज़ाने बांटेगा और आपको यह साहित्य भी दिया गया है। ये किताबें यही खज़ाना हैं तो इस व्याख्या को सुन कर चीफ साहिब उछल पड़े और शिर्क से तौबा: करने की घोषणा की तो अल्लाह तआला मुश्रिकों की हिदायत के लिए भी सामान पैदा करता है।

फ्रांस से एक महिला नादिया साहिबा कहती हैं कि मेरे पति पहले ही अहमदी थे लेकिन मैंने बैअत न की थी। कुछ समय पहले, अहमदियों पर होने वाले अत्याचारों के वीडियो को देखकर, मेरे पर इस का बहुत प्रभाव हुआ और मैं सोचने पर मजबूर हो गई। कहती हैं में समय के ख़लीफा के ख़ुत्बे भी सुनती रही। धीरे-धीरे इस्लाम की मूल शिक्षा मेरे पर प्रभाव डालने लगी। तब मैंने दुआ करनी शुरू कर दिया, हे ख़ुदा तआला, मुझे मार्गदर्शन दे। उसी समय मैंने सपने में देखा कि मैं फ्रांस की मस्जिद मुबारक में (यह वहां हमारी मस्जिद है) स्थित लायब्रेरी में बैठी हूं और मेरे स्वर्गीय पिता जी मेरे पास आते हैं और मुझे कुरआन का उपहार और कुरआन के साथ एक दस्तावेज प्रदान करता है (document) भी देते हैं। इस सपने के बाद, जब मैंने अहमदियत स्वीकार की तो मुझे पता चला कि मेरे पिता जी ने मुझे जो दस्तावेज दिया था वह बैअत का फार्म था। इसलिए मैंने इस कारण से अहमदियत स्वीकार कर ली।

फिर, अल्जीरिया के एक मित्र रिज़वान साहिब हैं। वह कहते हैं कि अहमिदयतसे परिचय के बाद मैं एम.टी.ए का ही हो कर रह गया। मेरे परिवार ने मुझे इस से रोकने की कोशिश की शुरुआत में तो बात केवल नसीहत की सीमा तक थी लेकिन बाद में यह नसीहत दबाव में बदल गई और मुझे इस चैनल से दूर रहने के लिए एक जबरदस्त आदेश मिलने लगा। जब मैंने इस स्थिति को देखा तो मैंने एक रात को सपना देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पांचों ख़लीफा मेरे घर में आए हैं और मैं उनके बीच बैठा हूं। यह रोया छोटी थी, लेकिन मेरे लिए इस में एक स्पष्ट संदेश था जब मैंने इसे अपने परिवार को बताया तो उन्होंने कहा कि यह एक साधारण सा ख़वाब है और तुम प्राय इस जमाअत के बारे में सोचते रहते हो इस लिए इस प्रकार की ख़वाब देखी है। मैंने उन की बात सुन ली लेकिन सोचने लगा कि क्या यह संभव है कि मैं बुलाओं तो ज़ैद को और आवाज़ सुन कर बकर आ जाए। जब यह संभव नहीं है, तो क्या यह संभव हो सकता है कि मैं ख़ुदा तआला से मार्गदर्शन चाहूं, दुआ करूं परन्तु मुझे शैतान की तरफ से मार्गदर्शन हो। बहरहाल कहते हैं मुझे अपने घर वालों की बातों पर विश्वास न आया। और फिर 200 9 ई में मैंने बैअत कर ली।

ये कुछ घटनाएं जिन्हें मैंने वर्णन किया है। इस प्रकार की बहुत सी घटनाएं हैं। अल्लाह तआला इन नए आने वालों को ईमान और विश्वास में तरक्की भी प्रदान करे। श्रद्धा और वफादारी में वृद्धि करे, और हम जो पहले अहमदी हैं, हम में से प्रत्येक को ईमान में बढ़ाए।

☆ ☆ ☆

**इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें**

**नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :**

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

# अच्छी बात

न जाने आदमी दिन में कितनी बातें करता है और कितने कर्म करता है। परन्तु क्या कभी उस ने गंभीरतापूर्वक सोचा है कि निस्सन्देह हमारी जीभ बात करने के लिए बनाई गई है। हाथ पैर काम-काज और दिल भावनाओं को समझने के लिए बनाया है और हमारी अक़्ल एवं दिमाग़ विभिन्न कार्यों को सोचने के लिए बनाए गए हैं परन्तु क्या संसार के सभी आदमी अच्छी बातें ज़ुबान पर लाते हैं और क्या उन के हाथ पांव ऐसे ही कार्य करते हैं जो समाज के लिए हितकारी, लाभदायक एवं अनुकरणीय होते हैं। और क्या आदमी की समस्त घोषणाएं तथा दावे इस योग्य होते हैं कि उन को स्वीकार कर लिया जाए। हमारा तजुर्बा हमें बताता है कि ऐसा हरगिज़ नहीं होता। हां प्रत्येक व्यक्ति का दावा ज़रूर है कि वही अच्छा है और उसका विचार उत्तम है।

पवित्र क़ुर्आन मजीद में अल्लाह तआला का कथन है कि :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

(हा मीम अस्सज्दह : 34)

**अनुवाद** - और बात कहने में उससे उत्तम कौन हो सकता है जो अल्लाह की ओर बुलाए और नेक कर्म करे और कहे कि नि:सन्देह मैं पूर्ण आज्ञाकारियों में से हूँ।

इस आयत में बताया गया है कि सब से अच्छी बात उस व्यक्ति की है जो मानव जाति की भलाई के लिए उसे अल्लाह की ओर बुलाए। ख़ुदा तआला की ओर बुलाने वाली बात, और उस का परिचय देने वाली बात सब से अच्छी है। यह इसलिए है कि आदमी की सब भलाइयां इसी में है कि उस के पैदा करने वाले की पहचान उसे हो।

अत: अल्लाह की ओर बुलाना सब से अच्छी बात है और अन्य सब बातें इस से कम हैं। इस का कारण यह है कि हमारा जीवन सीमित है इस की तुलना में परलोक का जीवन ही वास्तविक जीवन है। अत: इस की तैयारी करना और उस ओर ध्यान देना बहुत बड़ी बात है।

परन्तु यह बात उस समय तक लाभदायक नहीं हो सकती जब तक उस के लिए कोई उचित कार्य न किए जाएं। कोई व्यक्ति नेकी की बात करे, अल्लाह की ओर बुलाए परन्तु उस का आचरण तथा चरित्र अच्छा न हो तो उस का मुंह से कहना कोई लाभ नहीं देगा। अत: ज़रूरी है कि नेकी की तरफ बुलाने वाले का अपना नमूना तथा आदर्श भी हो। इसलिए ऊपर वर्णित आयत में नेकी की दावत देने के साथ ही अगला शब्द "अमले सालिहा" समुचित कर्म दूसरे स्थान पर रखा गया है। इस से अभिप्राय यह है कि 'दाई इलल्लाह' अल्लाह की ओर बुलाने वाला उस समय तक सफल नहीं हो सकता। जब तक उस के अपने कर्म भी उस सांचे में न ढले हों और उस की नेकी एवं उच्च नमूने, आदर्श उसके साथ न हों।

फिर तीसरे नम्बर पर इस आयत में यह कहा गया है कि अल्लाह की ओर बुलाने वाला "वक़ाला इन्ननी मिनल मुस्लिमीन" कहने वाला हो अर्थात् उस की सारी चेष्टाएं प्रयास शान्ति एवं अमन की स्थापना के लिए हों। उस का उठना बैठना, चलना फिरना मानव जाति की भलाई के लिए हो।

इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसीलिए मुसलमान की परिभाषा करते हुए फ़रमाया कि मुसलमान वह है जिस के हाथ एवं जीभ से सारी मानव जाति सुरक्षित रहे। स्वयं आपने अपने जीवन के आदर्श उदाहरण के रूप में मानव-जाति के लिए छोड़े हैं जिनका अनुसरण करके कोई भी व्यक्ति वास्तविक मुसलमान अर्थात् शान्ति का अनुसरण करने वाला तथा शान्ति का प्रचार-प्रसार करने वाला बन सकता है।

इस युग में हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद तथा महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम ने मुसलमान की जो परिभाषा प्रस्तुत की है वही वास्तविक परिभाषा है। उपरोक्त तीन बातें एक सच्चे मोमिन की निशानी हैं। अल्लाह तआला हमें इन बातों पर चलने की शक्ति दे। आमीन

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

# ख़ुत्बः जुमअः

**12 रबीउल् अव्वल का वह दिन है जब दुनिया में नूर आया जिस को अल्लाह तआला ने सिराज मुनीर कहा। जिस ने दुनिया को रूहानी रोशनी प्रदान करनी थी। जिस ने ख़ुदा तआला की हुकूमत दुनिया में स्थापित करनी थी, और की। जिस ने बरसों के मुर्दों सो रूहानी ज़िन्दगी देनी थी और दी जिलस ने दुनिया में अमन और शान्ति प्रदान करनी थी और की। जिस को अल्लाह तआला ने फरमाया وَ مَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ। (अल्अंबिया 108) और हम ने तुझे दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा है। जो केवल इंसानों के लिए नहीं है जो चौपायों तथा पक्षियों के लिए रहमत है। जो कवल मुसलमानों के लिए रहमत नहीं बल्कि ग़ैर मुस्लिमों के लिए भी रहमत थे और है। और जिस की शिक्षा कयामत तक के लिए प्रत्येक के लिए रहमत है. जिस के बारे में अल्लाह तआला ने आप के मानने वालों के बारे में फरमाया कि अल्लाह के रसूल में तुम्हारे लिए उत्तम आदर्श है।**

---

**हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे लिए तौहीद की स्थापना के नमूने भी स्थापित किए। इबादतों के नमुने भी स्थापित किए। उच्च आचरण के नमूने भी स्थापित किए और बन्दों के अधिकारों के नमूने भी स्थापित किए। परन्तु अफसोस है कि अजकल मुसलमानों की अधिकतर संख्या दावा तो आप की मुहब्बत का करती है परन्तु व्यवहार इस के उलट करती है जिस की हमारे आका हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शिक्षा दी है जो आप ने अमल कर के दिखाए आप तो सारे संसार के लिए रहमत बन कर आए। और ये लोग जो मुहब्बत का दावा करते हैं और आज 12 रबीउल्ल अव्वल को बड़े जोश से मना रहे हैं इस में बजाय इस के कि अहद करने के हे अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम तेरे आदर्श पर चलते हुए रहमतें चारों तरफ फैलाएं अधिकतर मुसलमान देशों में उपद्रव की स्थिति है।**

---

**पाकिस्तान और अन्य मुस्लिम देशों में उपद्रवों और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्तम आदर्श से विमुखता की दर्दनाक स्थिति का उल्लेख और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत इलाही, इबादत की स्थापना और मानव जाति की सहानुभूति और विनय तथा विनम्रता आदि के उज्जवल उदाहरणों से आप के उच्चतम आदर्श को अपनाने का आदेश।**

---

**पहलों से मिलने वाली आख़रीन की इस जमाअत के लोगों का भी फर्ज़ है कि इस आदर्श का अनुकरण करते हुए जैसे सहाबा ने इबादतों के स्तर ऊंचे किए थे हम अपनी इबादतों के स्तर उंचें करें और केवल दुनियादारी में ही न डूबे रहें। ज़ैली तंजीमें और जमाअत का निज़ाम यह रिपोर्ट देते हैं कि हमारे इतने प्रतिशत नमाज़ पढ़ने वाले हो गए। चालीस प्रतिशत, पचास प्रतिशत, साठ प्रतिशत, हम तो जब तक सौ प्रतिशत इबादत करने वाले न पैदा कर लें हमें आराम से नहीं बैठना चाहिए। और केवल निजाम नहीं बल्कि प्रत्येक को ख़ुद की समीक्षा करनी चाहिए कि मैं किस अवस्था में हूं।**

---

**आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पर चलते हुए अहमिदयों को अपनी सच्चाई के स्तर ऊंचे करने की आवश्यकता है ताकि इस्लाम की सुन्दर शिक्षा के प्रसार में आसानी हो। तब्लीग़ के लिए आवश्यक है कि कथन और अनुकरण एक हो। अगर व्यवहार में सच्चाई नहीं तो लोग धार्मिक शिक्षा को भी झूठा समझेंगे। ख़ुदा तआला की हस्ती एक सच्चाई है। इस सच्चाई को फैलाने और सच के द्वारा फैलाना आज हमारा काम है।**

---

**अपने आचरण को प्रत्येक अवस्था में अच्छा रखने की आवश्यकता है और यही आज एक अहमदी की आदत होनी चाहिए। आज मुसलमानों में जो उपद्रव हैं, फसाद हैं इन की बुनियादी कारण यही है कि इन के आचरण गिरे हुए हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को भूल गए हैं और केवल मौखिक दावे हैं।**

---

**आज, यदि वास्तविक खुशी मनानी है तो फिर आप के आदर्श पर अनुकरण कर के मनाई जा सकती है। जहां इबादतों के स्तर भी ऊंचें होंगे, जहां तौहीद पर भी पूर्ण विश्वास हो और उच्च आचरण के आदर्श भी ऊंचे हों। अगर यह नहीं तो हम में औद दूसरों में कोई अन्तर नहीं। अगर हम अनुकरण नहीं कर रहे तो वो लोग जो बिखरे हुए हैं और आरज़ी लीडर और तथा कथित उलमा के पीछे चल कर लोगों के लिए तंगियों के सामान पैदा कर रहे हैं इन में और हम में कोई अन्तर नहीं होगा।**

---

**अफ्रीकन अमेरिकी अहमदी सलमा ग़नी फिलाडल्फिया (अमरीका) की वफात, मरहूमा के ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ैब।**

---

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रि-हिल अज़ीज़, दिनांक 1 दिसम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

12 रबीउल्ल अव्वल का वह दिन है जब दुनिया में नूर आया जिस को अल्लाह तआला ने सिराज मुनीर कहा। जिस ने दुनिया को रूहानी रोशनी प्रदान करनी थी। जिस ने ख़ुदा तआला की हुकूमत दुनिया में स्थापित करनी थी, और की। जिस ने बरसों के मुर्दों सो रूहानी ज़िन्दगी देनी थी और दी जिलस ने दुनिया में अमन और शान्ति प्रदान करनी थी और की। जिस को अल्लाह तआला ने फरमाया وَ مَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ। (अल्अंबिया 108) और हम ने तुझे दुनिया के लिए रहमत बना कर भेजा है। जो केवल इंसानों के लिए नहीं है जो चौपायों तथा पक्षियों के लिए रहमत है। जो कवल मुसलमानों के लिए रहमत नहीं बल्कि ग़ैर मुस्लिमों के लिए भी रहमत थे और है। और जिस की शिक्षा कयामत तक के लिए प्रत्येक के लिए रहमत है. जिस के बारे में अल्लाह तआला ने आप के मानने वालों के बारे में फरमाया कि अल्लाह के रसूल में तुम्हारे लिए उत्तम आदर्श है। जैसा कि फरमाता है لَقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِىۡ رَسُوۡلِ اللّٰهِ اُسۡوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنۡ كَانَ يَرۡجُوا اللّٰهَ وَ الۡيَوۡمَ الۡاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيۡرًا ( अल्अहज़ाब 22) कि नि:सन्देह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में नेक नमूना है प्रत्येक उस आदमी के लिए जो अल्लाह और आख़रत की उम्मीद रखता है और बहुत अधिक अल्लाह को याद करता है। अत: उस आदर्श पर चलने के मुसलमान मुसलमान नहीं कहला सकता।

हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमारे लिए तौहीद की स्थापना के नमूने भी स्थापित किए। इबादतों के नमूने भी स्थापित किए। उच्च आचरण के नमूने भी स्थापित किए और बन्दों के अधिकारों के नमूने भी स्थापित किए। परन्तु अफसोस है कि आजकल मुसलमानों की अधिकतर संख्या दावा तो आप की मुहब्बत का करती है परन्तु व्यवहार इस के उलट करती है जिस की हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शिक्षा दी है जो आप ने अमल कर के दिखाए आप तो सारे संसार के लिए रहमत बन कर आए। और ये लोग जो मुहब्बत का दावा करते हैं और आज 12 रबीउल्ल अव्वल को बड़े जोश से मना रहे हैं इस में बजाय इस के कि अहद करने के हे अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम तेरे आदर्श पर चलते हुए रहमतें चारों तरफ फैलाएं अधिकतर मुसलमान देशों में उपद्रव की स्थिति है।

आज तो इस ख़ुशी के दिन प्रत्येक मुसलमान के दिल से प्रकट होना चाहिए था कि हम जिस नबी के मानने वाले हैं वह अमन तथा सलामती का बादशाह है। वह दुनिया के रहमत है। वह अल्लाह तआला की इबादत के उच्च स्तर स्थापित करना वाला है। वह नैतिकता के उच्च आदर्श पर स्थापित है और हम अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार इस की सुन्नत पर चलने वाले हैं। अत: हम आज के दिन इस नबी की जन्म के दिन की ख़ुशी में मुहब्बत , प्यार और अमन तथा सलामती के चश्मे जारी होंगे। यही हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि ने अपने मानने वालों से कहा है और यही इन से आशा रखी है और यही इन को शिक्षा दी है परन्तु इस के उलट मुसलमानों में फसाद की अवस्था छाई हुई है जैसा कि मैंने कहा बल्कि कुछ स्थानों पर ग़ैर मुस्लिम दुनिया भी मुसलमानों के भय के कारण भयभीत है।

पाकिस्तान में इस भय के कारण उपद्रव की आग एक स्थान ने दूसरे स्थान पर न फैल जाए कुछ शहरों में आज मोबाइल फोन की सर्विस बन्द कर दी गई है। पोलिस की भारी संख्या प्रत्येक चौक और सड़क पर खड़ी है। क्या यह इस नबी के जन्म दिन मनाने की ख़ुशी का तरीका है। कि प्रत्येक शरीफ आदमी भयभीत है और हुकूमत कानून लागू करने के लिए ला एण्ड आर्डर के लिए सुरक्षा लिए हुए है। हमारे प्यारे आका के नाम पर अहमिदयों के विरुद्ध बद ज़ुबानी करना, और गन्द बकना तो रोज़ का काम है परन्तु आज के दिन की ख़ुशी में आज इस में भी तीव्रता आ गई है। अपने विचार में ये लोग इस काम से इस महान नबी के सम्मान के बढ़ा रहे हैं। कुठ दिन हुए पाकिस्तान के कई शहरों में जो घेराओ हुआ, धरने दिए, इस ने प्रत्येक शरीफ शहरी को परेशान किया हुआ है। कारोबार ठप हो गए हैं। कोई मरीज़ अस्पताल नहीं जा सकता था स्कूल बन्द कर दिए गए दुकाने बन्द कर दी गईं। कोई आदमी जिस के घर में खाने पीने का सामान नहीं था अपने बच्चों के लिए खाने पीने का सामान नहीं ला सकता था। करोड़ों और अरबों रुपया का कौम को नुकसान हुआ और ये सब कुछ उन तथा कथित उलमा की रसूल की मुहब्बत में हुआ. वह जो सारे संसार के लिए रहमत है जिस ने हमें यह शिक्षा दी है कि रास्तों के अधिकार अदा करो आप ने फरमाया बाज़ारों में शोर करने से बचो।

( सहीह अल्बुख़ारी किताबुल बुयूअ हदीस 2125)

आप ने फरमाया रास्तों में बैठने से बचो। जब सहाबा ने कहा कि हम बैठने पर मजबूर हैं क्योंकि उस समय में तो कारोबारी स्थान नहीं होते थे, दफतर नहीं होते थे कि वहां बैठ कर कारोबारी मामले तय करें इस लिए बाज़ारों में बैठ कर, रास्तों में बैठ कर तय किए जाते थे। आप ने इस बात को सुन कर फरमाया कि फिर रास्तों के हक अदा करो। जब अर्ज़ किया गया कि हे अल्लाह के रसूल रास्तों के हक क्या हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया नज़रें नीचीं रखा करो। दुख देने से बचो कि यह रास्ते का हक है। सलाम का जवाब दो कि यह रास्त का हक है। नेक बात की नसीहत करो और बुरी बात से रोको यह रास्ते का हक है।

( सहीह अल्बुख़ारी किताबुल मज़ालिम वल्ग़ज़ब हदीस 2465)

लेकिन ये लोग तो अल्लाह के रसूल के सम्मान के नाम पर रास्ते बन्द कर के लोगों के कष्ट में डाल रहे हैं इस के बावजूद ये लोग धर्म के ठेकेदार हैं और अपनी इच्छा के अनुसार जिस को चाहें काफिर बना दें और जिस को चाहें मामिन बना दें। बहर हाल यह तो उन के अनुकरण हैं जो उन के ज़ाती स्वार्थों को प्राप्त करने के लिए हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के आदर्श से उन चीज़ों का दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। ये लोग जो चाहते हैं करते हैं परन्तु हम अहमिदयों को काम है कि हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रत्येक पक्ष को अच्छी तरह से देखें और उस पर अनुकरण करने की कोशिश करें। अपनी सारी ताकतों और शक्तियों के अनुसार काम करने की कोशिश करें। इस समय में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि की ज़िन्दगी के हवाले से आप के जीवन के कुछ पहलु वर्णन करूंगा।

अल्लाह तआला से जो आप को मुहब्बत थी इसे वर्णन करते हुए एक स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि:

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हस्ती के सच्चे आशिक हुए और दीवाना हुए और फिर वह पाया जो दुनिया में किसी को नहीं मिला। आप को अल्लाह तआला से इतनी मुहब्बत थी कि साधारण लोग भी कहा करते थे कि عَشِقَ مُحَمَّدٌ عَلٰی رَبِّہ अर्थात मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अपने रब्ब पर आशिक़ हो गया

(मल्फूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 273 संस्करण 1985 प्रकाशन यू.के)

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम और प्यार के बारे में बयान फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फरमाते हैं कि

"जब यह आयतें उतरीं कि मुशरेकीन गन्दे हैं अपवित्र हैं सब से बुरी सृष्टी हैं. आज्ञानी हैं और शैतान की सन्तान हैं और उन के उपास्य आग का ईंधन हैं और जहन्नम की लकड़ी हैं। तो अबू तालिब ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा हे मेरे भतीजे अब तेरी कठोर बातों से क़ौम बहुत अधिक ग़ुस्सा में है और निकट है कि तुझ को हलाक कर दे। तूने उन के बुद्धिमानों को मुर्ख कहा और उन के बुज़र्गों को सब से बुरी सृष्टि कहा और उन के उपास्यों का नाम जहन्नम की आग कहा और आग की लकड़ी कहो और साधारण रूप से उन सब को अपवित्र और शैतान की सन्तान और गन्दा कहा। मैं तुझे भलाई के लिए कहता हूं कि अपनी ज़बान को थाम और बुरा कहने सा रुक जा वरना में क़ौम के मुकाबला की ताकत नहीं रखता।"( यह आप के चाचा ने आप को कहा।) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि "हे चाचा! यह बुरा कहना नहीं है बल्कि सच्चाई की अभिव्यक्ति है और ठीक बात का अपने स्थान पर वर्णन करना है और यही तो काम है जिसके लिए मैं भेजा गया हूँ। अगर इस के लिए मुझे मरना पड़े तो मैं इस मौत के लिए अपने आप को तैय्यार पाता हूं। मेरा जीवन इसी राह में वक्फ है मैं मृत्यु के भय को सच्चाई को व्यक्त करने से रुक नहीं सकता और चाचा, यदि आप अपनी कमज़ोरी और कष्ट का ध्यान है तो तू मुझे अपनी पनाह में रखने से अपना हाथ खींच ले। अल्लाह के कसम मुझे आप की कोई ज़रूरत नहीं। मैं अल्लाह के आदेश पहुंचाने से किसी प्रकार नहीं रुक रुकूंगा। मुझे अपने मौला के आदेश जान से भी अधिक प्यारे हैं। अल्लाह की कसम अगर मैं इस रास्ते में मारा भी जाऊं तो फिर चाहता हूं कि बार-बार ज़िन्दा हो कर इसी राह में मरता रहूं। यह भय का स्थान नहीं बल्कि मुझे इस में आन्नद आता है कि इस मार्ग में दुख उठाओं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह तकरीर कर रहे थे और चेहरे पर सच्चाई और नूर के कारण चमक स्पष्ट थी जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह तकरीर समाप्त कर चुके तो हक की रोशनी देख कर अपने आप अबू तालिब के आंसू आ गए और कहा कि मैं तेरी इस उच्च अवस्था से अज्ञान था तू अन्य ही रंग में है और मैं दूसरे रंग में हूं। जा अपने काम में लग जा जब तक मैं ज़िन्दा हूं जहां तक मेरी ताकत है मैं तेरा साथ दूंगा।

(इज़ाला औहाम रूहानी ख़जायन भाग 3 पृष्ठ 110.111)

आज हम अहमदियों पर यह आरोप लगाया जाता है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम को मानने की वजह से ये काफिर हैं यह घटना जिसे मैंने अभी उल्लेख किया है, हम इतिहास में पढ़ते और सुनते हैं, लेकिन जिस व्याकुलता और हार्दिक भावना से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस को वर्णन किया है इस से आप के इश्के मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी पता चलता है और इस सम्बंध से फिर अल्लाह तआला से इश्क के रास्ते भी नज़र आते हैं जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें दिखाए फिर इश्के मुहम्मद में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के इस पहलू के बारे में और अधिक बयान फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

" इसलिए मैं हमेशा आश्चर्य की निगाह से देखता हूँ कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। (उस पर हज़ारों दरूद और अभिवादन)। उसके उच्च स्थान का छोर पता नहीं हो सकता और उसकी पवित्र प्रभावशीलता का अनुमान करना मनुष्य का काम नहीं। अफसोस कि जैसा हक पहचानने का है उसके स्थान को पहचाना नहीं किया गया। वह तौहीद जो दुनिया से खो गई थी, वह एक पहलवान है जो इसे दुनिया में फिर से लाता है। उस ने ख़ुदा से अत्यधिक स्तर पर मुहब्बत की और बहुत अधिक स्तर पर मानव जाति से साहनुभूति में उस की जान पिघली।" (ये दो बातें हैं। अल्लाह तआला से प्यार और

मानव जाति की सहानुभूति में अपने आप को फना कर लेना।) "इसलिए ख़ुदा ने जो उसके दिल के राज़ों का परिचित था उसे सभी नबियों और सभी सर्वोच्च और आख़रीन पर उत्कृष्टता दी और उस की मुरादें उसके जीवन में उस को दीं। वही है जो प्रत्येक फ़ैज़ क स्रोत है और वह व्यक्ति जो बिना उस के फैज़ को स्वीकार किए उसके किसी नेकी का दावा करता है वह इंसान नहीं है बल्कि शैतान की सन्तान है क्योंकि प्रत्येक नेकी की कुंजी उसे दी गई है और प्रत्येक अनुभूति का ख़ज़ाना उसे दिया गया है। जो उसके माध्यम से नहीं पाता वह सदैव का वंचित है। हम क्या चीज़ हैं और हमारी क्या वास्तविकता है हम नेअमत का इंकार करने वाले होंगे अगर इस बात को स्वीकार नहीं करते कि वास्तविक तौहीद हम ने इसी नबी के माध्यम से पाई और ज़िन्दा ख़ुदा की पहचान हमें इसी सही नबी के माध्यम से और उसके नूर से मिली है और ख़ुदा के बातचीत और वार्तालाप का श्रेय जिस से हम उसका चेहरा भी देख रहे हैं, हमें इस महान नबी के माध्यम से ही प्राप्त हुआ है। इस हिदायत के सूरज की रोशनी धूप की तरह हम पर पड़ती है और उसी समय तक हम प्रकाशित रह सकते हैं जब तक कि हम उसके सामने खड़े हैं। "

(हकीकुतल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22 पृष्ठ 118-119)

अत: आप सल्लल्लाहो के पीछे चलने से ही वास्तविक तौहीद का हमें ज्ञान हो सकता है। आप के आदर्श पर अनुकरण कर के ही हम अल्लाह तआला तक पहुंच जाएं और यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा की बुनियाद है।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादत के क्या उच्च स्तर थे। हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह अन्हा आप की नमाज़ तहज्जुद की स्थिति का वर्णन फरमाते हुए फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तहजुद्द की नमाज़ में ग्यारह रकअतों से अधिक न पढ़ते थे, परन्तु वे इतनी प्यारी और लम्बी और सुन्दर होती थीं कि इस नमाड़ की लम्बाई और सुन्दरता के बारे में मत पूछू।"

( सहीह अल्बुख़ारी हदीस 1147)

एक रिवायत में आता है कि नमाज़ पढ़ते हुए एक सहाबी ने आप को देखा। अर्थात एकान्त में जब आप नफल पढ़ रहे थे। तो वह कहते हैं कि उस समय रोने की प्रचुरता के कारण आप के सीने से ऐसी आवाज़ें आ रही थीं जैसे चक्की के चलने की आवाज़ होती है।

(सुनन अबी दाऊद किताबुस्सलात हदीस 904)

एक परंपरा में है कि जिस तरह हांड़ी में पानी उबलने की आवाज़ होती है। (सुनन निसाई किताबुस्सहू हदीस 1215)

परंपराओं में यह भी आता है कि कुई बार नमाज़ में खड़े-खड़े आप के पांव सूज जाया करते थे और फूल कर फट जेता थे हज़रत आयशा वर्णन करती हैं कि एक बार मैं ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वर्णन किया अल्लाह के रसूल! आप इतना कष्ट क्यों उठाते हैं जब कि अल्लाह तआला ने आप के अगले पिछले सारे गुनाह माफ कर दिए हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क्या मैं यह न चाहूं कि मैं अल्लाह तआला के शुक्र करने वाला बन्दा बनूं।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुत्तफसीर ... हदीस 4837)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इबादत के इन मानकों ने सहाबा में क्या इंकलाब पैदा किया, ये वर्णन फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"मैं बड़े ज़ोर से कहता हूँ कि चाहे कैसा ही पक्का दुश्मन हो और चाहे वह ईसाई हो या आर्य जब वे इन स्थितियों को देखेगा जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहले अरब के थे और फिर इस परिवर्तन पर नज़र करेगा जो आप की शिक्षा और प्रभाव से पैदा हुई है, तो उसे अपने आप आप की सच्चाई की गवाही देनी पड़ेगी। मोटी से बात है कुरआन करीम ने आप की पहली अवस्था का नक्शा तो इस प्रकार खींचा है" (आप के मानने वाले जो अरब के लोग थे उनकी पहली हालत का तो यह नक्शा खींचा है कि) "يَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ ( मुहम्मद 13) "(यानी इस प्रकार खाते हैं जिस प्रकार जानवर खाते हैं जानवरों वाली हालत होती है।) "यह तो उन के कुफ्र की अवस्था थी फिर जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र प्रभाव ने उन पर असर किया तो उन की हालत वह हो गई يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّ قِيَامًا (अल्फुरकान 65:) अर्थात वह अपने रब के हुज़ूर सिज्दा करते हुए और खड़े होकर कर गुज़ारते हुए रातें काट देते हैं।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "जो बदलाव आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरब के बर्बरों में की और जिस गड्ढे से निकाल कर जो ऊंचाई और स्थान तक उन्हें पहुंचाया उस सारी स्थिति के नक्शे को देखने से अपने आप मनुष्य रो पड़ता है कि क्या महान क्रांति है जो आपने किया है।" आप फरमाते हैं, "दुनिया की किसी और कौम में इस का उदाहरण नहीं मिलता। यह केवल कहानी नहीं है यह घटनाऐं हैं जिन की सच्चाई को एक ज़माना को स्वीकार करनी पड़ता है।"

(मल्फूज़ात जिल्द 9 पृष्ठ 144-145, संस्करण 1985 प्रकाशन यू, के)

अत: पहलों से मिलने वाली आख़रीन की इस जमाअत के लोगों का भी फर्ज़ है कि इस आदर्श का अनुकरण करते हुए जैसे सहाबा ने इबादतों के स्तर ऊंचे किए थे हम अपनी इबादतों के स्तर उंचें करें और केवल दुनियादारी में ही न डूबे रहें। ज़ैली तंजीमें और जमाअत का निज़ाम यह रिपोर्ट देते हैं कि हमारे इतने प्रतिशत नमाज़ पढ़ने वाले हो गए। चालीस प्रतिशत, पचास प्रतिशत, साठ प्रतिशत, हम तो जब तक सौ प्रतिशत इबादत करने वाले न पैदा कर लें हमें आराम से नहीं बैठना चाहिए। और केवल निजाम नहीं बल्कि प्रत्येक को ख़ुद की समीक्षा करनी चाहिए कि मैं किस अवस्था में हूं।

फिर सच्चाई और सत्यता में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या आदर्श था? आप के सबसे बड़े दुश्मन नज़र बिन हारिस की गवाही सुनें। एक बार कुरैश के सरदार जमा हुए अबू जहल और नज़र बिन हारिस शामिल थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में जब किसी ने यह कहा कि इन्हें जादूगर मशहूर कर दिया जाए या झूठा करार दे दिया जाए तो नज़र बिन हारिस खड़ा हुआ और कहने लगा कि हे गिरोह कुरैश ! ऐसा मामला तुम्हारे सामने आ गया है जिस के मुकाबला के लिए तुम कोई तरीका नहीं कर सकते। कहता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम में से एक जवान लड़के थे और तुम में से सब से अधिक प्रिय थे। सब से अधिक सच बोलने वाले थे। तुम में से सब से अधिक अमनत वाले थे. अब तुम ने उन की कान की पट्टियों में उम्र के चिन्ह देखे अर्थात सफेद बाले आने शुरू हो गए और जो वह पैग़ाम ले कर आए तो तुम ने कहा कि वह जादूगर है। उन में जादू की कोई बात नहीं। हम ने जादूगर देखे हुए हैं. तुम ने कहा कि वह काहिन (सितारों की इबादत करने वाला) है हम ने काहिन देखे हुए हैं। वह हरगिज़ काहिन नहीं। तुम ने कहा कि वह शायर है हम शेअर की सारी किस्में जानते हैं। वह शायर नहीं है। तुम ने कहा कि वह मजनून है इस में जनून की कोई निशानी नहीं। हे क़ुरैश के सरदार! और अधिक ध्यान से सोच लो तुम्हारा मामला एक बहुत बड़ी बात से है।"

(सीरत इब्ने हश्शाम भाग 1 पृष्ठ 192 अध्याय उतबा बिन रबी प्रकाशन दारुल कुतुब अल्अरबी बैरूत 2008 ई)

फिर अबू जहल आप के सच्चे होने का अर्थात सच बोलने से इनकार कभी नहीं कर सका। उसने कहा कि मैं तुम्हें झूठा नहीं कहता, परन्तु जो शिक्षा लाए वह ग़लत है क्योंकि हमारी मूर्तियों के ख़िलाफ बोल रहे हो।

(सुनन अत्तिरमज़ी अबवाब तफसीरुल कुरआन हदीस 3064)

अबू सुफ़यान ने भी हरकल के दरबार में यही कहा था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी झूठ नहीं बोला और हमेशा सच बोलने की हिदायत करते हैं।

(सहीह अल्बुख़ारी किताब बदउल वह्यी हदीस 7)

अत: दुश्मन से दुश्मन भी आप को कभी झूठा नहीं कह सका और यही आपकी नबुव्वत की बहुत बड़ी दलील है। यहूदी आलिम ने आप के चेहरे को देख कर कहा था कि यह झूठे का चेहरा नहीं हो सकता।"

(सुनन अत्तरिमज़ी अबवाबुल कियामत हदीस 2485)

अत: आज भी आप की शिक्षा और सच्चाई के उच्च गुणवत्ता हैं जो ग़ैर मुसलमानों को इस्लाम के पास कर सकते हैं। यह झूठ फरेब और धोखा इस्लाम के ख़िलाफ घृणा और धोखेबाजी में वृद्धि कर सकता है, इस्लाम के निकट नहीं ला सकता है यह दुनियादारी की बातें और अपनी हुकूमतों को कायम करना तथा कथित उलमा का झूठ की बुनियाद पर अपने मेंबरों को संभालना यह कभी इस्लाम की प्राथमकिता प्रमाणित नहीं कर सकता। अत:आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श पर चलते हुए अहमिदयों को अपनी सच्चाई के स्तर ऊंचे करने की आवश्यकता है ताकि इस्लाम की सुन्दर शिक्षा के प्रसार में आसानी हो। तब्लीग़ के लिए आवश्यक है कि कथन और अनुकरण एक हो। अगर व्यवहार में सच्चाई नहीं तो लोग धार्मिक शिक्षा को भी झूठा समझेंगे। ख़ुदा तआला की हस्ती एक सच्चाई है। इस सच्चाई को फैलाने और सच के द्वारा फैलाना आज हमारा काम है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"एक बुद्धिमान व्यक्ति को स्वीकार करना पड़ता है कि इस्लाम से पहले सभी धर्म बिगड़ चुके थे और रूहानिय खो चुकी थी। अत: हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सच्चाई को प्रकट करने के लिए एक महान मुजद्दिद (सुधारक)

थे जो खो चुकी सच्चाई को फिर दुनिया में लाए इस गर्व में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कोई नबी भी शरीक नहीं। कि आप ने सारी दुनिया का एक अन्धेरे में पाया और फिर आप के प्रकट होने से वह अन्धेरा नूर में पलट गया। जिस क़ौम में आप पैदा हुए आप फौत न हुए जब तक इस सारी क़ौम ने शिर्क का लिबास उतार कर तौहीद का लिबास न पहन लिया और न केवल इतना बल्कि वे लोग उच्च ईमान की अवस्था को पहुंच गए। और सच्चाई, वफा और ईमान के वे काम उन से प्रकट हुए जिस का उदाहरण दुनिया के किसी हिस्सा में नहीं पाया जाता। यह सफलता और इतनी सफलता किसी नबी को सिवाए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नसीब नहीं हुई। यही एक बड़ी दलील है आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी है कि आप एक ऐसे युग में आए और पधारे कि जबकि ज़माना बहुत अधिक अन्धकार में पड़ा हुआ था अपने आप एक महान सुधारक को चाह रहा था और फिर आप ने ऐसे समय में दुनिया से निधन किया कि जबकि लाखों आदमी शिर्क और बुतों की पूजा को छोड़ कर एकेश्वरवाद और सीधे रास्ते को धारण कर चुके थे और वास्तव में यह पूर्ण सुधार आप से ही विशिष्ट थी कि आप ने एक वहशी तथा जानवरों की आदत वाली क़ौम इंसानी आदतें सिखाईं या दूसरे शब्दों में यूं कहें कि जानवरों को इंसान बनाया और फिर इंसानों से शिक्षा वाला इंसान बना दिया और फिर शिक्षित व्यक्तियों से ख़ुदा वाला इंसान बना दिया। और रूहानियत की रूह उन में फूंक दी और उन्हें सच्चे ख़ुदा के साथ उन का सम्बन्ध जोड़ दिया ।

(लेक्चर स्यालकोट सियालकोट, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 206-207)

अत: अगर वास्तविक मुसलमान कहलाना है, अगर सच्चे ख़ुदा के साथ संबंध बनाने वाला बनना है तो सत्य के मानकों को बढ़ाने की ज़रूरत है और आज अगर कोई इसका हक अदा कर सकता है, तो अहमदी कर सकते हैं कि उन्होंने इस ज़माना के इमाम के साथ एक अहद किया है कि वे धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देंगे। अत: इस को केवल अहद तक ही न रहने दें , बल्कि प्रत्येक अहमदी का हर कर्म इस पर गवाह होना चाहिए, तभी अहद की सच्चाई प्रकट होगी।

एक महान गुण विनम्रता और विनय है या यह कह सकते हैं कि विनय तथा विनम्रता में भी आप का आचरण अपनी महानता को छू रहा था । आप की विनम्रता का वर्णन करते हुए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा बयान फ़रमाती हैं कि कभी ऐसा नहीं हुआ कि सहाबा या अहले बैत में से, घर वालों में से किसी ने आप को बुलाया हो और आप ने उसे लब्बैक कह कर जवाब न दिया हो हज़रत आयशा फरमाती हैं कि इसलिए कुरान में अल्लाह तआला फरमाता है कि وَ اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (अल्कलम:5) कि तो तू महान अचारण पर नियुक्त किया गया है।

(तफसीर दुर्रे मंसूर जिल्द 8 पृष्ठ 226 सूर: अल्कलम प्रकाशक दार अहयाअ अत्तुरास अल्अरबी बैरूत 2001ई)

हज़रत अली रज़ि अल्लाह रिवायत करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी की तरफ़ रुख़ फेरते तो पूरा रुख़ फेरते। नज़र हमेशा नीची रहती। लगता कि धरती की तरफ आप की अधिक नज़र रहती है। हर मिलने वाले को सलाम में पहल करते थे।

( अश्शमाइल अल्मुहम्मिदया ले इमाम अत्तिरमज़ी हदीस 8 पृष्ठ 38 मक्का 1993)

आप ने फरमाया, "मैं मानव जाति का सरदार हूं परन्तु इस में कोई गर्व की बात नहीं है। कयामत के दिन में सब से पहले शिफाअत(सिफारिश) करने वाला हूं और सब से पहला हूंगा जिस की शिफाअत कूबूल की जाएगी। लेकिन इसमें कोई गर्व की बात नहीं और क़यामत के दिन हमद (स्तुति) का झंडा मेरे हाथ में होगा लेकिन इसमें कोई गर्व नहीं।

(सुनन इब्ने माजा किताबुज़्ज़ुहद हदीस 4308)

यह विनम्रता की चरम है जो आप के हर कथनी और करनी से प्रकट होती है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"केवल शेखियों और व्यर्थ अंहकार और गर्व से बचना चाहिए और विनम्रता और विनय को धारण करना चाहिए। देखो! आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो कि वास्तव में सबसे बड़े और सम्मान के योग्य थे उनकी विनम्रता और विनय का एक नमूना कुरआन शरीफ में मौजूद है। लिखा है कि एक अंधा आदमी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में आकर कुरआन शरीफ पढ़ा करता था। एक दिन आप के पास मक्का के सरदार, शहर के धनाढ्य जमा थे और आप उन से बातों में लगे हुए थे। बातों में लगे होने के कारण कुछ देर होने की वजह से वह अंधा उठ कर चला गया। यह एक मामूली बात थी अल्लाह तआला ने इसके बारे में सूरत नाज़िल फरमा दी। इस पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के घर गए और उसे साथ लाकर अपनी चादर मुबारक पर बिठाया। हज़रत मसीह मौऊद फरमाते हैं कि " मूल बात यह है कि जिन लोगों के दिलों में अल्लाह तआला की महानता होती है उन्हें अवश्य विनम्र और विनय बनना ही पड़ता है क्योंकि वह ख़ुदा तआला की बेनियाज़ी से हमेशा तरसाँ और अस्थिर रहते हैं "। आप फरमाते हैं कि, "जिस तरह से अल्लाह तआला देने वाला है उसी प्रकार पकड़ने वाला भी है। अगर किसी हरकत से नाराज़ हो जाए तो दम भर में सब कारख़ाना ख़त्म है. अत: चाहिए कि इन बातों पर ध्यान दो।

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 343-344 संस्करण 1 9 85, यू.के)

आपकी सीरत और आदर्श का विषय तो इतना अधिक है कि न समाप्त होने वाला है। प्रत्येक आचरण में आप का नमूना महान है और क्यों न हो आप एक महान उस्ताद और चरित्र निर्माण करने वाले उस्ताद हैं। अगर कोई बुरा भी है और आप के पास आया तो आप ने इस से भी नैतिकता से व्यवहार किया। अत: हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा रिवायत करती हैं कि एक व्यक्ति ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आने की अनुमति मांगी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे देख कर फरमाया, "यह अपने घराने में बहुत ही बुरा भाई है ।" अभिप्राय यह कि व्यवहार अच्छा नहीं करता है, अपने भाई के हैसियत से। और अपने ख़ानदान का बहुत ही बुरा बेटा है जब वह आया और बैठ गया, तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहुत अच्छे रंग में उस से व्यवहार किया बावजूद इस के कि वह बुरा भाई था, बुरा बेटा था और उस में बुरी आदतें थीं। आपने इस से बहुत अच्छा व्यवहार फरमाया। जब वह चला गया,तो हज़रत आयशा ने पूछा कि हे अल्लाह के रसूल जब आप ने उसे देखा तो आप ने उस के बारे में अमुक अमुक बात कही थी और फिर उस से बातों के मध्य में आप ने महान आचरण का व्यवहार किया। आप ने फरमाया है आयशा तूने कब मुझे बुरी भाषा का व्यवहार करते हुए पाया। आप फरमाते हैं कि नि:सन्देह कयामत के दिन अल्लाह तआला के निकट वह आदमी सब से बुरा होगा जिस की बुराई से डर कर लोग उस की मुलाकात छोड़ दें।

(सहीह अल-बुख़ारी किताबुल अदब, हदीस 6032)

जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक अवसर पर पूछा गया कि मुझे किस प्रकार पता चले कि मैं अच्छा कर रहा हूं या बुरा कर रहा हूं । आप ने फरमाया तब तुम अपने पड़ोसी को यह कहते हुए सुनो कि तुम अच्छे हो तो तुम्हारा व्यवहार अच्छा है और जब पड़ोसी कहे कि तुम बुरे हो और तुम्हारा व्यवहार बुरा है फिर समझ लो कि तुम बुरे हो और तुम्हारा व्यवहार जो है वह ठीक नहीं है।

(सुनन इब्ने माजा किताबुज़्ज़ुहद हदीस 4223)

अत: अपने आचरण को हर हालत में अच्छा रखने की ज़रूरत है और यही आज एक अहमदी की पहचान होनी चाहिए।

आज मुसलमानों में जो उपद्रव हैं, फसाद हैं इन की बुनियादी कारण यही है कि इन के आचरण गिरे हुए हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को भूल गए हैं और केवल मौखिक दावे हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को लोग भूल गए हैं और केवल मौखिक दावे कर रहे हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पूर्ण नमूना का ज़िक्र करते हुए एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि:

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारी बातों में पूर्ण नमूना हैं। आप(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के जीवन को देखो, आप महिलाओं के साथ कैसा व्यवहार करते थे।" फरमाते हैं "मेरे निकट वह आदमी बुज़दिल और एक डरपोक है जो महिला के मुकाबला में खड़े होता है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन का अध्ययन करो, ताकि तुम्हे पता चले कि आप कैसे उच्चतम व्यवहार वाले थे। वाबजूद आप( सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) बड़े रौब वाले थे परन्तु अगर कोई बूढ़ी औरत भी आप को खड़ा कर देती तो आप उस समय तक खड़ा रहते जब तक कि वह अनुमति न दे। आप(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) सौदा ख़ुद ख़रीद कर लाते थे। एक बार जब आप ने कुछ ख़रीदा एक सहाबी ने कहा मुझे पकड़ा दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "जिस की चीज़ हो उसे उठानी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि इस से यह नहीं निकालना चाहिए कि आप लकड़ियों का गट्ठा भी उठा कर लाया करते थे फरमाते हैं अत: इन घटनाओं से यह है कि आप की सादगी और उच्च स्तर की बे-तकल्लुफी का पता लगता है।"

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 44.45 प्रकाशन 1985 ई प्रकाशन यू.के)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

" हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखो कि आप की नबुव्वत के

समय में से तेरह साल दु:ख और कष्टों के थे और दस साल शक्ति और शासन के। मुकाबला में कई क़ौमें। पहले तो अपनी ही क़ौम। यहूदी थे। ईसाई थे। मूर्तियों की पूजा करने वालों का एक गिरोह था। मजूसी थे। जिन का काम क्या है बुतपरस्ती। उन की वास्तविक ख़ुदा की आस्था से गहरी आस्था थी वह कोई काम करते ही न थे जो उन बुतों के सम्मान के विरुद्ध हो। शराब पीने की यह अवस्था के दिन में पांच बार या सात बार शराब बल्कि पानी के स्थान पर शराब ही से काम लिया जाता था। हराम को मां के दूध की तरह समझते थे और कत्ल आदि तो उन के निकट गाजर मूली की तरह था। सार यह कि सारी दुनिया की कौमों का निचोड़ और गन्दे अकीदे का इत्र उन के हिस्से में आया हुआ था। इस क़ौम का सुधार करना और उन को ठीक करना फिर उस ज़माने में कि आप अकेले और तन्हा थे। कभी खाने को मिला और कभी भूखे ही सो रहे। जो थोड़े से साथ चलने वाले हैं उन की बुरी हालत बनी हुई है।( अर्थात मक्का में बहुत बुरे हालात बने हुए थे। भूखमरी तक अवस्था पहुंच गई थी और जो साथी थे मुसलमान कहलाने वाले थे उन को भी रोज़ मारें पड़ रही थीं।) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं बेकस और असहाय। इधर के उधर और उधर के इधर मारे मारे फिरते हैं। देश से निकला दिए गए। फिर आप फरमाते हैं कि फिर दूसरा ज़माना आया (आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का) सारा अरब प्रायद्वीप एक सिरे से दूसरे सिरे तक ग़ुलाम बना हुआ है। कोई विरोद्ध के रंग में चूं भी नहीं कर सकता। और ऐसी ताकत और रौब ख़ुदा तआला ने दिया था कि अगर चाहते तो सारे अरब को कत्ल कर देते। एक सांसारिक आदमी होते तो उन से उन करतूतों का बदला लेने का उत्तम अवसर था।( जो पहले ज़ुल्म होते रहे) जब उलट कर मक्का फत्ह कर लिया तो "*ला तस्रीबा अलैकुम अलयौम*" फरमाया। अत: इस प्रकार जो दोनों ज़माने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आए और दोनो के लिए एक काफी अवसर था कि अच्छी तरह से जांचे और परखे जाते और एक जोश या शीघ्र जोश की अवस्था न थी। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रत्येक प्रकार के आचरण की जांच हो चुकी थी। और आप का धैर्य, सहनशीलता, बहादुरी, दानशीलता, उपकार, इत्यादि सारे गुणों का प्रकटन हो चुका और कोई हिस्सा ऐसा न था कि बाकी रह गया हो।

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 195.196 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

आज, यदि वास्तविक ख़ुशी मनानी है तो फिर आप के आदर्श पर अनुकरण कर के मनाई जा सकती है। जहां इबादतों के स्तर भी ऊंचे होंगे, जहां तौहीद पर भी पूर्ण विश्वास होगा और उच्च आचरण के आदर्श भी ऊंचे होंगे। अगर यह नहीं तो हम में और दूसरों में कोई अन्तर नहीं। अगर हम अनुकरण नहीं कर रहे तो वे लोग जो बिखरे हुए हैं और आरज़ी लीडर और तथा कथित उलमा के पीछे चल कर लोगों के लिए तंगियों के सामान पैदा कर रहे हैं इन में और हम में कोई अन्तर नहीं होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की मांग ही यही है कि प्रत्येक काम में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श को सामने रखें। अल्लाह करे कि इस की हम सब को तौफ़ीक़ मिले।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च स्थान का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फरमाते हैं

वह इंसान जो सब से अधिक पूर्ण और सम्पूर्ण इंसान था और सम्पूर्ण नबी था और पूर्ण बरकतों के साथ आया था जिस से रूहानी उठने और जागने के कारण दुनिया की पहली कयामत प्रकट हुई और एक मरा हुआ संसार उस के आने से ज़िन्दा हो गया। वह मुबारक नबी हज़रत ख़ातुमल अंबिया, इमामुल असिफया, ख़त्मुल मुरसलीन, फख़रुल अंबिया जनाब मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। हे प्यारे ख़ुदा उस प्यारे नबी पर वह रहमत और दरूद भेज जो संसार के आरम्भ से तूने किसी पर न भेजा हो। अगर वह महान नबी दुनिया में न आता जो जितने छोटे-छोटे नबी दुनिया में आए हैं जैसा कि यूनुस और अय्यूब और मसीह इब्ने मर्यम और मलाकी और यह्या और ज़करिया आदि इन की सच्चाई पर हमारे पास कोई दलील न थी यह इस नबी का इहसान है कि यह नबी भी दुनिया में सच्चे समझे गए। اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

(इतमामुल हुज्जत रूहानी ख़ज़ायन भाग 8 पृष्ठ 308)

नमाज़ों के बाद मैं एक नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा, जो आदरणीया सिस्टर सलमा ग़नी साहिबा अमरीका का है। फिलाडल्फिया में रहती थीं। 20 नम्बर को 83 वर्ष की आयु में वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्न इलैहि राजेऊन। अमीर साहिब अमरीका लिखते हैं कि 1 960-61 ई में 26 साल की उम्र में, वह बैअत कर के जमाअत में शामिल हुईं। पेशे की दृष्टि से एक स्कूल शिक्षक थीं। उन्हें 1 975-76 ई के जलसा रबवा में शामिल होने का मौका मिला। बहुत ख़ुशी से वहां की घटनाएं और हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला से मुलाकात का वर्णन करती थीं। इन को लगभग 15 साल सदर लजना इमा अल्लाह अमरीका के रूप में काम करने की तौफीक़ मिली। स्वर्गीया पांचों समय की नमाज़ों के अतिरिक्त तहजुद्द की नमाज़ का भी ध्यान रखती थीं। हमेशा जमाअत की तरक्की के लिए कोशिश करती थीं। आप की बड़ी इच्छा थी कि फिलोडलिफया में मस्जिद पूर्ण हो और इस के लिए आप दुआएं भी करती थीं। उम्मीद है कि इन्शा अल्लाह अब शीघ्र पूर्ण हो जाएगी। आदरणीय अमीर साहिब लिखते हैं कि स्थानीय अमीर साहिब का कहना है कि सदर जमाअत के रूप में मेरे साथ इन का इताअत का पूर्ण सम्बम्ध था और सहयोग था। सभी गतिविधियों को साझा करती थीं। सदर साहिब और अधिक कहते हैं कि दो महीने पहले आप को कैंसर का पता चला था। मैं वफात से एक हफ्ते पहले इन से मिलने गया तो कहने लगीं मेरी वसीयत सुन लो। डाक्टर चार छ: महीने कहते हैं लेकिन कुछ दिन की बात है। जनाज़ा तुम ने पढ़ाना है तीन दिन से अधिक इंतिज़ार नहीं करना। Willingborough की मस्जिद में जनाज़ा होगा। कब्र की व्यवस्था फिलोडलफिया में हो गई है। मरहूम की कोई औलाद नहीं थी आपके परिवार में कोई अहमदी या मुस्लिम नहीं था। लेकिन आप का दूसरे भाई-बहनों के साथ व्यवहार बहुत अच्छा था। सदर लजना अमेरिका लिखती हैं कि आपका पालन-पोषण ईसाई माहौल में हुआ था, लेकिन पन्द्रह वर्ष की आयु से ही आप के मन में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु और ईसाई धर्म की ग़लत धारणा पर सवाल उठने लगे। आप एक ऐसे धर्म की तलाश में थीं जो आप के दिल को संतुष्ट कर सके। इस तलाश में, उन्होंने कैथोलिक ईसाई धर्म को गहराई से अध्ययन किया और अन्य धर्मों, बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और विभिन्न ईसाई संप्रदायों के बारे में जानकारी प्राप्त की। हर धर्म में अच्छी शिक्षा प्राप्त की, लेकिन उनमें से कोई भी आपकी धर्म की अपेक्षाओं को पूरा नहीं करता था। इस बीच, आप के एक दोस्त ने जिस ने कुछ समय पहले ही इस्लाम को स्वीकार किया था आपको एक पुस्तिका दी जिस पर लिखा था कि यीशु की मृत्यु क्रूस पर नहीं हुई थी। इस पम्फेलट को देख कर आप की आंखों में आंसो आ गए और आप ने कहा कि मैं एक बार फिर ज़िंदा हो गई। ऐसा लग रहा था कि कई सालों के एक हिस्सा मेरे अस्तित्व का मर गया था। इस पुस्तिका में उठने वाले सभी सवालों के जवाब थे उसके बाद आप मस्जिद में गईं और वहां से विभिन्न पुस्तकें ख़रीदीं। उन्होंने उन का अध्ययन भी किया। अन्त में आपने अमेरिका के शहर फिलाडल्फिया में बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया। आप ने अपने जीवन की अंतिम सांस तक इस जगह पर निवास किया। एक बार उल्लेख किया कि यह वहीं पम्फेलट है जिस पर लिखा हुआ था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफात क्रूस पर नहीं हुई थी जो मेरे इस्लाम लाने का काण बना जो कि सच्चा और वास्तविक धर्म है। अहमदी होने के रूप में 57 साल का जीवन व्यतीत किया। इस में आप ने जमाअत और समय के ख़लीफा से श्रद्धा ईमानदारी और निष्ठा और प्यार और प्रेम का सबसे ऊंचा उदाहरण स्थापित किया। आज्ञाकारिता में दूसरों के लिए एक उदाहरण थीं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के युग में 15 साल तक सदर लजना अमरीका के रूप में सेवा की तौफ़ीक़ पाई इसके बाद बतौर मानद सदस्य लजना सेवा की तौफ़ीक़ मिलती रही। आपको अफ्रीकी अमेरिकी डेस्क की लजना की संबंध सलाहकार समिति के रूप में भी सेवा की तौफीक मिली। और इस प्रकार आप बहुत सारे लोगों के सुधार का कारण बनीं। आप का दिल प्रत्येक समय तब्लीग़ के कामों की तरफ रहता था इसलिए बहुत उच्च प्रभावी तरीके से ईसाईयों को तब्लीग़ करती थीं। उन की कोशिश के कारण बहुत ले लोगों ने अहमदियत को स्वीकार किया और इस प्रकार आप कई लोगों के सुधार का साधन बनीं। हमेशा भाईचारा और प्यार और मुहब्बत का व्यवहार करने की सलाह देते थीं। घाना और नाइजीरिया के कई सफरों के बाद, आप हर जगह आंटी सलमा ग़नी के रूप में जानी जाती थीं। जमाअत अमेरिका में आप हमेशा एक नेक, परहेज़गार और हर हार्दिक महिला के रूप में याद रहेंगी।

अल्लाह तआला स्वर्गीया के स्तर ऊंचे करे और बाकी जो इन के माध्य से अहमदी हुए हैं अल्लाह तआला उन को भी मज़बूत करे और अमरीका जमाअत को तौफीक दे, अमरीकनों को भी तौफीक़ दे कि वह इस्लाम के वास्तविक सन्देश को सुनने समझने वाले और स्वीकार करने वाले हों।

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 4/11 January 2018 Issue No. 1/2

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

तक बेघर हैं। कदाचित नादान लोग कहेंगे कि यह निशान क्योंकर हो सकता है, ये भूकम्प तो पंजाब में नहीं आए, परन्तु वे नहीं जानते कि ख़ुदा समस्त विश्व का ख़ुदा है, न केवल पंजाब का। उसने समस्त विश्व के लिए ये सूचनाएँ दी है न कि केवल पंजाब के लिए। यह दुर्भाग्य है कि ख़ुदा तआला कि ख़ुदा तआला की भविष्यवाणियों को अकारण टाल देना और ख़ुदा की वाणियों ध्यानपूर्वक न पढ़ना तथा प्रयत्न करते रहना कि किसी प्रकार सत्य छुप जाए, परन्तु इस प्रकार झुठलाने से सच्चाई छुप नहीं सकती।

स्मरण रहे कि ख़ुदा ने मुझे सामान्य तौर पर भूकम्पों की सूचना दी है। अत: निश्चय समझो कि जिस प्रकार भविष्यवाणी के अनुसार अमरीका में भूकम्प आए, इसी प्रकार यूरोप में भी आए तथा एशिया के विभिन्न स्थानों में आएँगे और उनमें से कुछ प्रलय के सदृश्य होंगे और इतनी मौतें होंगी कि रक्त की नहरें चलेंगे। इस मृत्यु से पशु-पक्षी भी बाहर नहीं होंगे और पृथ्वी पर इतनी भयंकर विनाश-लीला आएगी कि उस दिन से कि जब मानव ने जन्म लिया ऐसी विनाशलीला कभी नहीं आई होगी तथा अधिकतर स्थान अस्त-व्यस्त हो जाएंगे कि जैसे उनमें आबादी नहीं थी। इसके साथ पृथ्वी और आकाश में अन्य भी भयानक आपदाएँ जन्म लेंगी, यहां तक प्रत्येक बुद्धिमान की दृष्टि में वे बातें असाधारण हो जाएँगी तथा खगोल शास्त्र और दर्शनशास्त्र की पुस्तकों के किसी पृष्ठ में उनका पता नहीं मिलेगा, तब मनुष्यों में व्याकुलता पैदा होगी कि यह क्या होने वाला है तथा बहुत से लोग मुक्ति पाएँगे और बहुत से तबाह हो जाएंगे। वे दिन निकट हैं अपितु मैं देखता हूँ कि द्वार पर हैं कि संसार एक प्रलय का दृश्य देखेगा और न केवल भूकम्प अपितु और भी भयावह आपदाएँ प्रकट होंगी, कुछ आकाश से तथा कुछ पृथ्वी से। यह इसलिए कि मानव ने अपने ख़ुदा की उपासना का परित्याग कर दिया है तथा सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण साहस एवं सम्पूर्ण विचारों से संसार पर ही गिर गए हैं। यदि मैं न आया होता तो इन विपत्तियों में कुछ विलम्ब हो जाता, परन्तु मेरे आने के साथ ख़ुदा के प्रकोप के वे गुप्त इरादे जो एक लम्बे समय से गुप्त थे प्रकट हो गए। जैसा कि ख़ुदा का कथन है

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا

और तौबा एवं पश्चाताप करने वाले सुरक्षा पाएँगे और वे जो विपत्ति से पहले डरते हैं उन पर दया दृष्टि की जाएगी। क्या तुम विचार करते हो कि तुम इन भूकम्पों से सुरक्षित रहोगे या तुम अपनी युक्तियों स्वयं को बचा सकते हो? कदापि नहीं। मानव-कार्यों का उस दिन अन्त होगा। यह मत विचार करो कि अमरीका आदि में भयंकर भूकम्प आए और तुम्हारा देश उससे सुरक्षित है। मैं तो देखता हूँ कि कदाचित उन से अधिक संकट का मुख देखोगे। हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी सुरक्षित नहीं और हे जज़ायर के रहने वालो! कोई कृत्रिम ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को निर्जन पाता हूँ। वह एक और अद्वितीय ख़ुदा एक समय तक खामोश रहा तथा उसकी आँखों के सामने अप्रिय कार्य किए गए और वह मौन रहा किन्तु अब वह भय के साथ अपना चेहरा दिखाएगा। जिसके कान सुनने के हों सुने कि वह समय दूर नहीं। मैंने प्रयास किया कि ख़ुदा की सुरक्षा के नीचे सब को एकत्र करूँ परन्तु आवश्यक था कि प्रारब्ध के लेखे पूरे होते। मैं सच-सच कहता हूँ कि इस देश की बारी भी निकट आती जाती है। नूह का युग तुम्हारी आँखों के सामने आ जाएगा और लूत की पृथ्वी की घटना तुम स्वयं अपनी आँखों से देख लोगे। किन्तु ख़ुदा प्रकोप में धीमा है, पश्चाताप करो ताकि तुम पर दया की जाए। जो ख़ुदा को त्यागता है वह एक कीड़ा है न कि मनुष्य और जो उस से नहीं डरता वह मुर्दा है न कि जीवित।

**108. एक सौ आठ वां निशान** - जिसका उल्लेख बराहीन अहमदिया में है यह है -

اَرَدْتُّ اَنْ اَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ اٰدَم

अर्थात् मैंने इरादा किया कि ख़लीफ़ा बनाऊँ अत: मैंने आदम को ख़लीफ़ा बनाया। यह इल्हाम पच्चीस वर्ष की अवधि से बराहीन अहमदिया में लिखा हुआ है। यहाँ बराहीन अहमदिया में ख़ुदा तआला ने मेरा नाम आदम रखा और यह एक भविष्यवाणी है जो इस बात की ओर संकेत करती है कि जिस प्रकार फ़रिश्तों ने आदम के दोष निकाले थे और उसे रद्द कर दिया था परन्तु अन्तत: ख़ुदा ने उसी आदम को ख़लीफ़ा बनाया और सब को उसके सम्मुख नत-मस्तक होना पड़ा। इसलिए ख़ुदा तआला का कहना है कि यहां भी ऐसा ही होगा। अत: मेरे विरोधी उलेमा तथा उन के सहपंथियों ने दोष निकालने में कमी न की तथा विनाश करने के लिए छल-प्रपंच का कोई उपाय नहीं छोड़ा जो न किया हो परन्तु अन्तत: ख़ुदा ने मुझे विजयी किया तथा इसी पर बस नहीं करेगा जब तक झूठ को अपने पैरों के नीचे न कुचले।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 265)

☆ ☆ ☆

## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

**ख़ुदा की क़सम**

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad